तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 13, अंक - 9, अगस्त 2025 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के 5 वर्ष

"नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी नए भारत की, नई उम्मीदों की, नई आवश्यकताओं की पूर्ति का सशक्त माध्यम है।"

श्री नरेंद्र मोदी

मानननीय प्रधानमंत्री

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
के 5 वर्ष

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक अग्रगामी सोच वाली रूपरेखा के रूप में विकसित हुई है जो देश में शिक्षा के भविष्य को प्रभावित कर रही है।"

श्री धर्मेंद्र प्रधान

मानननीय केंद्रीय शिक्षा मंत्री

शिक्षा सारथी

अगस्त 2025

प्रधान संरक्षक
नायब सिंह
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
विनीत गर्ग
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. विवेक अग्रवाल
महानिदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा
जितेंद्र कुमार
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्
गौरव कुमार
अतिरिक्त निदेशक
(प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक**: 150 रुपये

Published & Printed by **Parveen Sangwan** on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

> "शिक्षा सिखाने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि ये सीखने की भी प्रक्रिया है"
>
> **-प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी**

» अखिल भारतीय शिक्षा समागम-2025 5
» एनईपी से सुधरी देश की इनोवेशन रैंकिंग 10
» एनईपी के सफल पाँच साल 11
» श्री धर्मेंद्र प्रधान ने की हरियाणा की सराहना 12
» हरियाणा में डिजिटल शिक्षा का नया युग 13
» सतपुड़ा के जंगलों ने सुनाया जीवन का राग 14
» रंगों से झलके भाव 19
» शिल्प-संवेदना की यात्रा : उदयपुर कार्यशाला बनी अविस्मरणीय 22
» विज्ञान व जनसंचार को नव-उत्कर्ष देने का 'इरादा' 25
» खेल-खेल में विज्ञान 28
» मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला 30
» संस्कृत और संस्कृतिः भारत की दो अमूल्य निधियाँ 31
» Fragrance & Focus: How Aromas Boost Memory ... 32
» The Future of Multilingualism in India... 34
» Learning with the Heart: Why Social Emotional... 37
» Raksha Bandhan: A Celebration of Sibling Love ... 40
» Indian Independence Day: A Celebration of Freedom... 42
» Janmashtami: Celebrating the Birth of Lord Krishna 44
» Teej: A Celebration of Love 46
» Subhanshu Shukla: India's Emerging Space Hero 48

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनेगी भारत@2047 के निर्माण की नींव

पाँच वर्ष पूर्व 2020 में बनी राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने जिस नये युग की नींव रखी थी, आज वह आकार लेती दिखाई दे रही है। बीते दिनों नई दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय शिक्षा समागम-2025 केवल एक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि यह एक विचार का उत्सव था, एक नीति के अगले चरण में प्रवेश का राष्ट्रीय संकल्प था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 स्पष्ट इंगित करती है कि शिक्षा केवल परीक्षा पास करने का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन जीने की दिशा और दृष्टि है। इस नीति ने 'पढ़ो, रटो और भूल जाओ' की पद्धति से हटाकर 'सोचो, समझो और प्रयोग करो' की राह दिखाई। पाँच वर्षों की इस यात्रा में हम कई महत्त्वपूर्ण पड़ावों से गुज़रे- आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान, मातृभाषा में आरंभिक शिक्षा, शिक्षकों का प्रशिक्षण, और डिजिटल माध्यमों का समावेश जैसे अनेक बिंदुओं पर सार्थक कार्य हुआ है।

किन्तु अब बात केवल पीछे मुड़कर देखने की नहीं, आगे बढ़ने की है। और इस दिशा में हरियाणा ने जो स्पष्ट और साहसिक संकेत दिया है, वह वास्तव में अभिनंदनीय है। जहाँ देशभर में 2030 तक एनईपी के लक्ष्यों को लागू करने की तैयारी की जा रही है, वहीं हरियाणा ने घोषणा की है कि वह इसे 2025 से ही लागू करेगा। यह कोई सामान्य बात नहीं, बल्कि एक सोच है गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से 'नॉनस्टॉप विकास' की।

मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने भी इस दिशा में स्पष्ट संकेत दिया कि हमें नई पीढ़ी को केवल नौकरी के लिए नहीं, नेतृत्व के लिए तैयार करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का हरियाणा में त्वरित क्रियान्वयन इसीलिए ज़रूरी है, क्योंकि हम अपने बच्चों को वैश्विक स्तर की शिक्षा देना चाहते हैं, जिसमें भारतीय संस्कृति की जड़ें और आधुनिकता के पंख हों। शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा मानते हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति को समय से पहले लागू करना हमारे लिए सिर्फ़ एक लक्ष्य नहीं, एक ज़िम्मेदारी है। वे चाहते हैं कि हर बच्चा ज्ञान के साथ जीवन कौशल भी पाए।

'शिक्षासारथी' का यह अंक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर केंद्रित है। यह आपको कैसा लगा, अपनी राय अवश्य दीजिएगा। आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी। स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक मंगलकामनाएँ।

-संपादक

अखिल भारतीय शिक्षा समागम–2025

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुख क्षेत्रों पर हुई व्यापक चर्चा
शैक्षिक परिवर्तन के अगले चरण का एजेंडा किया गया तय

डॉ. प्रदीप राठौर

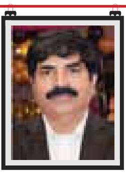

29 जुलाई, 2025 को नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में आयोजित अखिल भारतीय शिक्षा समागम 2025 (एबीएसएस-2025) में देश भर से शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं, शिक्षकों, उद्योगपतियों, सरकारी प्रतिनिधियों और शिक्षकों ने भाग लिया। यह समागम राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के पाँच वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित किया गया, जिसमें शिक्षा के विविध पहलुओं पर विमर्श हुआ। समागम का उद्देश्य भी यही था कि एनईपी-2020 के तहत हुई उल्लेखनीय प्रगति की समीक्षा की जाए और आगे का रास्ता तैयार किया जाए।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने समागम का

उद्घाटन किया। इस अवसर पर शिक्षा राज्य मंत्री और कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री जयंत चौधरी; शिक्षा और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास राज्य मंत्री डॉ. सुकांत मजूमदार तथा 13 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के शिक्षा मंत्री भी उपस्थित थे। इस अवसर पर उच्च शिक्षा विभाग के सचिव डॉ. विनीत जोशी; स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग के सचिव श्री संजय कुमार; प्रमुख शिक्षा विद्; अध्यक्ष; शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत स्वायत्त निकायों के प्रमुख; सीबीएसई, केवीएस, एनवीएस के क्षेत्रीय अधिकारी; उच्च शिक्षा संस्थानों के कुलपति/निदेशक/प्रमुख; अन्य मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारी; राज्य शिक्षा सचिव; समग्र शिक्षा के राज्य परियोजना निदेशक; एससीईआरटी के निदेशक; स्टार्टअप संस्थापक तथा स्कूली छात्र उपस्थित थे। हरियाणा से भी अनेक अधिकारी व शिक्षक इस समागम में शामिल हुए।

कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की प्रारूप समिति के अध्यक्ष, पद्म विभूषण डॉ. के. कस्तूरीरंगन को उनके दूरदर्शी नेतृत्व और भारत के शिक्षा एवं अंतरिक्ष क्षेत्र में उनके अग्रणी योगदान के लिए पुष्प अर्पित करने के साथ हुई। इसके बाद केंद्रीय विद्यालयों के छात्रों द्वारा प्रस्तुत स्वागत गीत ने माहौल को और भी जीवंत बना दिया। राज्य मंत्री श्री जयंत चौधरी ने एनईपी-2020 की पाँचवीं वर्षगाँठ पर माननीय प्रधानमंत्री का संदेश भी पढ़ा।

पाँच वर्ष पूर्ण होने पर सभी देशवासियों और विशेषकर युवा साथियों को अनेक शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि एनईपी-2020 माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की उस परिवर्तनकारी कल्पना को दर्शाता है, जिसमें उन्होंने शिक्षा को भारत के विकास की गाथा का केंद्र बिंदु बनाया है। उन्होंने यह भी कहा कि विकसित भारत 2047 के हमारे सपने की दिशा में आगे बढ़ने के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारा राष्ट्रीय मिशन है।

उन्होंने कहा कि पिछले 5 वर्षों में हम एनईपी-2020 को शिक्षा प्रणाली में एक प्रतिमान परिवर्तन के साथ कक्षाओं, परिसरों और समुदाय तक पहुँचाने में सफल हुए हैं। उन्होंने कहा कि भारतीयता ही एनईपी 2020 का मूल मंत्र है। वैज्ञानिक शिक्षा, नवाचार, अनुसंधान, भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय भाषाओं को केंद्र में रखते हुए हम शिक्षा को राष्ट्र निर्माण के वृहद् उद्देश्य से जोड़ रहे हैं।

उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि विकसित भारत केवल एक कल्पना ही नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा दिया गया एक सशक्त आह्वान है और एनईपी 2020 इस सपने को साकार करने का सबसे सशक्त माध्यम है। उन्होंने सभी साझेदारों से आग्रह किया कि वे केंद्रित और सक्रिय कदम उठाएँ, ताकि हर कक्षा अध्ययन का एक सार्थक स्थान बने और हर बच्चे की प्रतिभा को सँवारा जा सके।

उन्होंने यह कहकर अपनी बात समाप्त की कि अखिल भारतीय शिक्षा समागम केवल एक सम्मेलन नहीं, बल्कि विकसित भारत के निर्माण हेतु हमारे साझा संकल्प की अभिव्यक्ति है। उन्होंने सभी से पूरे मन से एनईपी 2020 के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए प्रतिबद्ध होने का आह्वान किया, कक्षाओं से रचनात्मकता की ओर और सीखने से राष्ट्र निर्माण की ओर बढ़ने की अपील की।

इस अवसर पर श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग (डीओएसईएल) और उच्च शिक्षा विभाग (डीओएचई) की अनेक पहलों का शुभारंभ किया :

पीएम जनमन

प्रधानमंत्री ने 15 नवम्बर, 2023 को, प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम-जनमन) का शुभारंभ किया। यह एक परिवर्तनकारी पहल है जिसका उद्देश्य 2023-24 से 2025-26 तक कमज़ोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) के उत्थान के लिए शिक्षा और आवश्यक बुनियादी ढाँचे के बीच की कमियों को दूर करना 29 जुलाई 2025 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में, 8 राज्यों में 187.35 करोड़ रुपए की लागत वाले 75 छात्रावासों की

आधारशिला रखी गई।

डीएजेजीयूए

माननीय प्रधानमंत्री ने 2अक्टूबर, 2024 को डीए-जेजीयूए धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान शुरू किया था, जिसका उद्देश्य विशिष्ट हस्तक्षेपों के साथ आकांक्षी जिलों में 63,000 से अधिक आदिवासी बहुल गाँवों और आदिवासी गाँवों को तृप्त करना है। 29 जुलाई 2025 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में, 12 राज्यों में 1190.34 करोड़ रुपए की लागत से 309 छात्रावासों का शिलान्यास किया गया।

डिजिटल शुरूआत

तारा ऐप

तारा ऐप पोर्टल का उद्देश्य कक्षा 3 से 8 तक के छात्रों के बीच पठन प्रवाह का आकलन और सुधार करने के लिए एक मज़बूत मंच प्रदान करके शिक्षा शासन में डेटा-आधारित निर्णय लेने को सक्षम बनाना है। यह संरचित शिक्षण, लक्षित सुधार और सीखने के परिणामों की निरंतर निगरानी में सहयोग करता है। यह ऑडियो रिकॉर्डिंग से पढ़ने की प्रवाहशीलता का मूल्यांकन करने के लिए भाषण प्रसंस्करण और मशीन लर्निंग का उपयोग करता है। वर्तमान में विस्तार की संभावना के साथ अंग्रेज़ी और हिंदी का समर्थन करता है। यह पढ़ने की अभिव्यक्ति और समझ का आकलन करने के लिए डब्ल्यूसीपीएम (प्रति मिनट सही शब्द), वाक्यांश, स्वर और तनाव को मापता है।

माई कैरियर एडवाइजर ऐपः

छात्रों को करियर निर्णय लेने में सक्षम बनाने के लिए, सरकार के शिक्षा मंत्रालय के स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग (डीओएसईएल) ने माई करियर एडवाइजर ऐप की शुरूआत की है - एक व्यापक, छात्र-केन्द्रित डिजिटल

प्लेटफ़ॉर्म वाधवानी फाउंडेशन और पीएसएससीआईवीई (एनसीईआरटी की एक घटक इकाई) के सहयोग से विकसित, इस ऐप का उद्देश्य देश भर के स्कूली छात्रों को व्यक्तिगत करियर मार्गदर्शन प्रदान करना है। यह ऐप 1000 से ज्यादा करियर पथों तक पहुँच प्रदान करती है, जिसमें नौकरी की भूमिकाओं, शैक्षिक आवश्यकताओं, आवश्यक कौशल और भविष्य की संभावनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी शामिल है।

स्वच्छ एवं हरित विद्यालय रेटिंग (एसएचवीआर) 2025-26

एसएचवीआर ने छह श्रेणियों में 60 संकेतकों का मूल्यांकन करते हुए 5-स्टार रेटिंग प्रणाली शुरू की हैः जल, शौचालय, साबुन से हाथ धोना, संचालन और रख-रखाव, व्यवहार परिवर्तन और क्षमता निर्माण, तथा पर्यावरणीय जिम्मेदारी के लिए नये मिशन लाइफ कार्य। संशोधित दिशानिर्देशों के अनुसार, प्रत्येक स्कूल के लिए एक स्टार रेटिंग लागू होती है। मान्यता (योग्यता प्रमाणपत्र) के लिए स्कूलों की 4 श्रेणियाँ होंगी। ज़िला स्तर पर कुल 8, राज्य स्तर पर 20 और राष्ट्रीय स्तर पर 200 स्कूलों को मान्यता (योग्यता प्रमाणपत्र) के लिए नामांकन हेतु विचार किया जाएगा।

डीओएचई की पहल

1. वेब-आधारित स्थानीय भाषा प्रवीणता परीक्षा पोर्टल

राष्ट्रीय परीक्षण सेवा -भारत (एनटीएस-1) परीक्षण और मूल्यांकन पर शोध करती है और इसने एक वेब-आधारित स्थानीय भाषा प्रवीणता परीक्षा पोर्टल विकसित किया है जो 22 भारतीय भाषाओं में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने (एलएसआरडब्ल्यू) कौशल का आकलन करने वाले ऑनलाइन परीक्षण संचालित करता है। इसमें 1,825 परीक्षणों को शामिल करते हुए 182,480 एलएसआरडब्ल्यू विषयों का एक डेटा बेस शामिल है। सामग्री विकास के एक भाग के रूप में, यह भारतीय भाषा में परीक्षण और मूल्यांकन पर शोधकार्य भी कर रहा है।

2. राष्ट्रीय प्रशिक्षुता प्रशिक्षण योजना (एनएटीएस) के अंतर्गत एआई शिक्षुता

शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय प्रशिक्षुता प्रशिक्षण योजना (एनएटीएस) के तहत कृत्रिम बुद्धिमत्ता(एआई) में शिक्षुता की परिकल्पना की है। इस पहल का उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा, विनिर्माण और निर्माण, शिक्षा, बैंकिंग, वित्तीय सेवाएँ और बीमा (बीएफएसआई), इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी/आईटीईएस जैसे क्षेत्रों में बढ़ती उद्योग माँगों को पूरा करने के लिए छात्रों के एआई ज्ञान और कौशल को बढ़ाना है।

3. आईआईटी बीएचयू और आईआईटी दिल्ली में नए युग का पाठ्यक्रम

आईआईटी बीएचयू ने बीटेक छात्रों के लिए लचीलापन प्रदान करने और बहु-विषयक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक नए युग का पाठ्यक्रम शुरू किया है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत छात्र पाँच शैक्षणिक विकल्पों में से चुन सकते हैंः (क) बीटेक, (ख) बीटेक (ऑनर्स), (ग) माइनर विषय के साथ बीटेक, (घ) सेकंड मेजर विषय के साथ बीटेक, और (ड) विस्तारित बीटेक से एमटेक करना।

एक दशक से भी ज्यादा समय के बाद आईआईटी दिल्ली ने अपने स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी पाठ्यक्रमों में संशोधन किया है, जो शैक्षणिक वर्ष 2025-26 से प्रभावी होंगे। संशोधित संरचना में लचीलेपन, व्यावहारिक शिक्षा, पर्यावरणीय स्थिरता और एआई जैसी उभरती तकनीकों पर ज़ोर दिया गया है।

4. वाइबः इंगेज, इंज्वाय, इनलाइटेन - आईआईटी रोपड़ द्वारा

वाइब, आईआईटी रोपड़ स्थित एजुकेशन डिज़ाइन

लैब द्वारा विकसित एक एआई-संचालित सतत सक्रिय शिक्षण प्लेटफ़ॉर्म है। यह स्मार्ट जाँच, अनुकूली चुनौतियों और रीयल-टाइम फ़ीडबैक के माध्यम से शिक्षार्थियों को सक्रिय रूप से संलग्न रखकर सच्ची महारत सुनिश्चित करता है।

बड़े पैमाने पर वैश्विक प्रभाव के लिए निर्मित, वाइब एक ईमानदार, प्रभावी और आनंददायक शैक्षिक अनुभव को बढ़ावा देता है। अपने ओपन-एक्सेस मॉडल और स्केलेबल आर्किटेक्चर के साथ, वाइब दुनिया के सीखने के तरीके को बदलने के लिए तैयार है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वाइब नियमित शिक्षण जाँचों को स्वचालित करके शिक्षकों को सशक्त बनाता है, जिससे उन्हें अनुभवात्मक और निगरानीयुक्त कक्षा शिक्षण पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए अधिक समय और स्थान मिलता है। यह बदलाव शिक्षक की भूमिका को पुनर्परिभाषित करता है जिससे वे अधिक समृद्ध और सार्थक शिक्षण अनुभव तैयार कर पाते हैं।

5. भाषा सागर

यह ऐप एनईपी 2020, एक भारत श्रेष्ठ भारत (ईबीएसबी मिशन) के लक्ष्यों और आजादी का अमृत महोत्सव समारोह के एक भाग के अनुरूप है, जो बीच में अंग्रेज़ी सीखने की आवश्यकता के बिना किसी भी भारतीय भाषा के माध्यम से किसी भी भारतीय भाषा को सीखने को बढ़ावा देता है।

वर्तमान में, ऐप में 22 भारतीय भाषाओं में कुल 18 वार्तालाप पाठ्यक्रम (485 सामान्य डोमेन-वार वाक्य) और सभी समर्थित भाषाओं में 24 शब्दावली निर्माण पाठ्यक्रम (1600+ शब्द) शामिल हैं।

6. भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्र और संस्कृत का इनसाइक्लोपीडिया शब्दकोश (आईकेएस-ईडी)

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय का भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्र और संस्कृत का इन साइक्लोपीडिया शब्दकोश (आईकेएस-ईडी), केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय और पुणे के डेक्कन कॉलेज की संस्कृत शब्दकोश परियोजना के संयुक्त प्रयासों से डेक्कन कॉलेज (डीयू) में शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वीकृति से स्थापित किया गया था। इस का उद्देश्य संस्कृत शब्दकोश परियोजना की निगरानी और आईकेएस इन साइक्लोपीडिया तथा क्रेडिट आधारित आईकेएस-स्वयं पाठ्यक्रमों का विकास करना है। यह शब्दकोश भारतीय ज्ञान प्रणालियों के क्षेत्र में एक संक्षिप्त इनसाइक्लोपीडिया (विश्वकोश) है, क्योंकि यह सभी विषयों और समय अवधियों में संस्कृत साहित्य में उपलब्ध प्रत्येक शब्द, संकल्पना, धारणा के साहित्यिक संदर्भों का एक संपूर्ण इनसाइक्लोपीडिया है।

7. कोषाश्री पोर्टल

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा श्री योजना के अंतर्गत सी-डैक पुणे के सहयोग से वित्त पोषित कोषाश्री परियोजना ने इनसाइक्लोपीडिक संस्कृत शब्दकोश के सभी 35 खंडों का डिजिटलीकरण कर दिया है। इसमें 62 विषयों के 1500 प्राचीन ग्रंथों से 15 लाख से अधिक शब्द और 1 करोड़ संदर्भ शामिल हैं। कोषाश्री ऑनलाइन पोर्टल अब उन्नत खोज, लेख लिखे जाने और संस्कृत फ़ॉन्ट टूल के साथ सार्वजनिक लॉन्च के लिए तैयार है, जिससे सहयोगात्मक शब्दकोश विकास और अनुसंधान संभव होगा। आईकेएस-ईडी केंद्र और कोषश्री पोर्टल दोनों का उद्घाटन अखिल भारतीय शिक्षा समागम के दौरान हुआ।

इस अवसर पर श्री धर्मेंद्र प्रधान की उपस्थिति में भारत में अपने परिसर स्थापित करने के लिए अग्रणी विदेशी विश्वविद्यालयों को निम्नलिखित आशय पत्र (एलओआई) प्रदान किए गए, जो एनईपी-2020 के तहत भारतीय उच्च शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण की दिशा में एक बड़ी प्रगति का प्रतीक हैं :

1. वेस्टर्न सिडनी यूनिवर्सिटी (डब्ल्यूएसयू), ऑस्ट्रेलिया - ग्रेटर नोएडा

1989 में स्थापित, डब्ल्यूएसयू सिडनी में 13 परिसरों और 49,000 से अधिक छात्रों वाला एक अग्रणी सार्वजनिक अनुसंधान विश्वविद्यालय है। स्थिरता और सामाजिक प्रभाव के प्रति अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता के लिए विख्यात डब्ल्यूएसयू की योजना ग्रेटर नोएडा में एक शाखा स्थापित करने की है जो अनेक अंडरग्रेजुएट व पोस्टग्रेजुएट पाठ्यक्रम प्रस्तुत करेगी।

2. विक्टोरिया यूनिवर्सिटी (वीयू), ऑस्ट्रेलिया- नोएडा

1916 में स्थापित, वीयू ऑस्ट्रेलिया के उन कुछ द्वि-क्षेत्रीय संस्थानों में से एक है, जो उच्च शिक्षा और व्यावसायिक (टीएएफई) दोनों प्रोग्राम प्रदान करते हैं। चीन, मलेशिया और श्रीलंका में इसकी मज़बूत उपस्थिति है और यह खेल विज्ञान, व्यवसाय और आईटी में एप्लायड रिसर्च के लिए जाना जाता है। वीयू के नोएडा परिसर में कई पाठ्यक्रम चलाए जाएँगे।

3. ला ट्रोब यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया - बेंगलुरु

1964 में अपनी स्थापना के साथ ला ट्रोब यूनिवर्सिटी एप्लायड रिसर्च, विशेष रूप से स्मार्ट शहरों, मोलेकूलर साइंस और बायोटेक में उत्कृष्टता के लिए जाना जाता है। बेंगलुरु स्थित इसका भारतीय परिसर कई पाठ्यक्रम प्रदान चलाएगा।

4. ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी, ब्रिटेन- मुंबई

1909 में स्थापित और क्यूएसवर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 में 51वें स्थान पर मौजूद ब्रिस्टल विश्वविद्यालय शोध के लिए जाना जाने वाला ब्रिटेन का प्रमुख विश्वविद्यालय है। यह रसेल समूह का सदस्य है। भारत में यह विश्वविद्यालय मुंबई में स्थापित होगा और अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराएगा।

इस अवसर पर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की प्रमुख उपलब्धियों और रूपांतरकारी प्रभावों को प्रदर्शित करने वाली एक लघु फिल्म दिखाई गई, जिसके बाद स्कूली एवं उच्च शिक्षा में नवीन पहलों और सर्वोत्तम कार्य प्रणालियों को प्रदर्शित करने वाली एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में अनुभव जन्य शिक्षा, एआई-संचालित समाधान, समावेशी बुनियादी ढाँचा, डिजिटल परिवर्तन, स्थिरता और सामुदायिक सहभागिता जैसे विषयों के माध्यम से एनईपी के विजन को दर्शाया गया। प्रेरणा - अनुभवात्मक शिक्षण कार्यक्रम, अटल टिंकरिंग लैब्स - एआई नवाचार और विद्यांजलि एवं उल्लास - सामुदायिक सहभागिता जैसे स्टॉलों ने देश भर के प्रभावशाली मॉडलों को रेखांकित किया।

drpradeeprathore@gmail.com

एनईपी से सुधरी देश की इनोवेशन रैंकिंग

धर्मेंद्र प्रधान

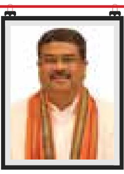

2020 में भारत ने केवल एक नई शिक्षा नीति ही नहीं अपनाई, बल्कि एक प्राचीन आदर्श को फिर से जीवंत किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) ने सीखने को राष्ट्र निर्माण का आधार बनाया और इसे हमारी सभ्यतागत परंपराओं से जोड़ा।

बढ़ता कौशल

पाँच वर्षों में एनईपी का असर केवल नीतियों तक नहीं, बल्कि कक्षाओं तक साफ दिखता है। अब छठी कक्षा के विद्यार्थी व्यावसायिक प्रयोगशालाओं में हाथों-हाथ कौशल सीख रहे हैं। अनुसंधान संस्थानों में भारत का पारंपरिक ज्ञान आधुनिक विज्ञान के साथ संवाद कर रहा है। एनईपी की सोच STEM क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और वैश्विक मंचों पर भारतीय संस्थानों की उपस्थिति में भी झलकती है।

भाषा नहीं बाधा

निपुण भारत मिशन ने बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान को कक्षा 2 तक सुनिश्चित किया है। यह प्रगति असर-2024 और परख राष्ट्रीय सर्वेक्षण-2024 जैसी रिपोर्टों में दिखाई देती है। एनईपी ने यह स्पष्ट किया कि भाषा कोई बाधा नहीं, बल्कि सशक्तीकरण का माध्यम है। 117 भाषाओं में प्राइमर विकसित किए गए हैं और भारतीय सांकेतिक भाषा को एक विषय के रूप में शामिल किया गया है।

वंचित भी आगे

समग्र शिक्षा और पीएम पोषण जैसी योजनाओं ने लगभग सार्वभौमिक नामांकन को संभव बनाया है। एनईपी का प्रभाव वंचित समूहों पर भी हुआ है। 5,138 से अधिक कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में 7.12 लाख से अधिक वंचित समुदायों की बालिकाएँ नामांकित हैं। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत 692 और PVTG छात्रों के लिए 490 से अधिक छात्रावास स्वीकृत किए गए हैं।

छात्रों को सीधा लाभ

एनईपी-2020 के परिवर्तन का एक प्रमुख स्तंभ हैं 14,500 पीएम-श्री स्कूल, जो आधुनिक, समावेशी और पर्यावरण के अनुकूल हैं। ये विद्यालय एनईपी के विजन के अनुरूप आदर्श मॉडल स्कूल बन रहे हैं, जो बुनियादी ढाँचे और शिक्षण पद्धति-दोनों को पुनर्परिभाषित कर रहे हैं। विद्यांजलि प्लेटफॉर्म ने 8.2 लाख स्कूलों को 5.3 लाख से अधिक वॉलंटियर्स और 2000 सीएसआर पार्टनर्स से जोड़ा है, जिससे 1.7 करोड़ छात्रों को सीधा लाभ मिला है।

बढ़ता नामांकन

उच्च शिक्षा में कुल नामांकन 3.42 करोड़ से बढ़कर 4.46 करोड़ हो गया है। इनमें लगभग 48% छात्राएँ हैं। महिला पीएच-डी नामांकन 0.48 लाख से बढ़कर 1.12 लाख हो गया है। एससी, एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक छात्रों का बढ़ता नामांकन उच्च शिक्षा में समावेशिता का ऐतिहासिक संकेत है।

इनोवेशन में आगे

एनईपी के अनुसंधान और नवाचार पर ज़ोर ने भारत के ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स को 81वें स्थान से 39वें तक पहुँचाया है। 400 से अधिक उच्च शिक्षा संस्थानों में 18,000 से अधिक स्टार्टअप इनक्यूबेट किए गए हैं। अनुसंधान एनआरएफ, पीएमआरएफ 2.0 और 6,000 करोड़ रुपये की वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन योजना शोध को विकेंद्रीकृत और सुलभ बना रही हैं। क्यूएसवर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 में भारत के 54 संस्थान शामिल हुए हैं, जबकि 2014 में केवल 11 थे।

नए सुपरनोवा

परिवर्तन की इस यात्रा का उत्सव अखिल भारतीय शिक्षा समागम के माध्यम से मनाया जा रहा है, लेकिन इसका मूल्यांकन शिक्षार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों के शांत आत्मविश्वास में हो रहा है। हमें अपने परिसरों में सीखने के परिणामों को और अधिक गहरा करना जारी रखना होगा। जहाँ शिक्षा है, वहीं प्रगति है। एक अरब जागरूक और सशक्त नागरिक केवल जनसांख्यिकीय लाभांश नहीं है, बल्कि नए भारत का सुपरनोवा हैं।

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार

एनईपी के सफल पाँच साल

डॉ. विनीत जोशी

29 जुलाई, 2020 को भारत ने न केवल एक नई नीति की शुरुआत की, बल्कि एक नए भारत की कल्पना करने का साहस भी दिखाया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 एक सामान्य सुधार नहीं, बल्कि ऐतिहासिक क्षण था। यह नीति हमारे आत्मबोध, हमारी आकांक्षाओं और उस शिक्षा व्यवस्था की परिकल्पना की अभिव्यक्ति है जो हमें भविष्य की ओर ले जाएगी।

अंकों से अर्थ की ओर

भारत में अब तक की सबसे व्यापक परामर्श प्रक्रिया का परिणाम है, जिसमें देशभर से दो लाख से अधिक लोगों ने भाग लिया। इसका उद्देश्य पुरानी चीजों को केवल सँवारना नहीं था, बल्कि सोच में परिवर्तन लाकर शिक्षा को रटंत से समझ की ओर, अंकों से अर्थ की ओर ले जाना था। और, सबसे जरूरी बात, इसे परीक्षा-आधारित दौड़ से हटकर उद्देश्य-आधारित यात्रा का रूप देना था।

जीवन के अनुरूप

सिर्फ पाँच वर्षों में यह दूरदर्शी दस्तावेज एक जीवंत आंदोलन बन चुका है। यह केवल सरकार द्वारा संचालित नहीं, बल्कि शिक्षक, संस्थान, अभिभावक, छात्र और समुदाय सभी की भागीदारी से संचालित हो रहा है। हमने स्कूली शिक्षा के ढाँचे को 5+3+3+4 में दोबारा परिकल्पित किया है, जिसमें प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल, खेल-आधारित शिक्षा और मूलभूत साक्षरता पर विशेष बल दिया गया है।

सीधी छाप

एनईपी की सबसे प्रभावशाली उपलब्धि इसकी आमजन जीवन में पड़ने वाली सीधी छाप है। हमारा सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) 26.3% से बढ़कर 30% से अधिक हो गया है। पिछले छह वर्षों से महिलाओं का जीईआर पुरुषों से अधिक रहा है। अनुसूचित जाति, जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक समुदायों में नामांकन निरंतर बढ़ रहा है।

बुनियादी संरचना

हमारा शोध भी तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। पीएचडी नामांकन दोगुना हो चुका है, शोध प्रकाशनों में 142% की वृद्धि हुई है और आज भारत वैश्विक शोध में तीसरे स्थान पर है।

भाषा का उत्सव

एनसीआरएफ, एनएचईक्यूएफ और सीसीएफयूपी जैसे तंत्र छात्रों को शैक्षणिक व्यावसायिक और कौशल के क्षेत्रों में निर्बाध रूप से आगे बढ़ने का अवसर दे रहे हैं। दोहरी डिग्री और 45 से अधिक अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ साझेदारी ने स्टूडेंट्स के लिए नए अवसरों के द्वार खोल दिए हैं। पहली बार, सीयूईटी, नीट और जेईई जैसी परीक्षाएँ 13 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं। यही नहीं, अनुवादिनी, ई-कुंभ और अस्मिता जैसी पहलें बहुभाषावाद का उत्सव मना रही हैं।

परंपरा बनी ताकत

पाँच वर्षों के अनुभव से स्पष्ट है कि एनईपी-2020 एक पीढ़ीगत बदलाव है। यह दुनिया को यह दिखाता है कि हमारे दिलों में बसी परंपरा हमारी सबसे बड़ी ताकत बन चुकी है। जब हम आगे बढ़ते हैं, तो अपने साथ केवल उपलब्धियों का गौरव नहीं, बल्कि आने वाले भविष्य को बेहतर बनाने का संकल्प भी लेकर चल रहे हैं।

सचिव
उच्च शिक्षा, भारत सरकार

श्री धर्मेंद्र प्रधान ने की हरियाणा की सराहना

शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा ने की केंद्रीय शिक्षा मंत्री से मुलाकात

एनईपी पर प्रदेश की तैयारियों तथा अन्य फ्लैगशिप कार्यक्रमों से कराया अवगत

हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा ने 9 जुलाई को केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान से नई दिल्ली में मुलाकात की। बातचीत के दौरान शिक्षा मंत्री ने उन्हें अवगत कराया कि हरियाणा ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को इस शैक्षणिक सत्र से लागू कर दिया है। इसी के अनुरूप पाठ्यक्रम भी तैयार किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने राज्यों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अपने-अपने राज्यों में वर्ष-2030 तक लागू करने का लक्ष्य दिया था, जबकि हरियाणा ने इसे 5 वर्ष पहले ही 2025 में लागू करके देश के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

शिक्षा मंत्री श्री ढांडा ने केंद्रीय मंत्री को इस बात की भी जानकारी दी कि यह सब हरियाणा सरकार की शिक्षा के प्रति गंभीरता को दर्शाता है। इस नीति को सिरे चढ़ाने में विभाग के अधिकारियों की दिन-रात मेहनत भी शामिल है। केंद्रीय मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने देश में सबसे पहले राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने के लिए हरियाणा सरकार की सराहना की।

बातचीत के दौरान शिक्षा मंत्री ने हरियाणा सरकार के कई फ्लैगशिप कार्यक्रमों के बारे भी केंद्रीय मंत्री को अवगत कराया। उन्होंने बताया कि सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों ने जेईई व नीट की परीक्षा में उम्दा प्रदर्शन किया है और 72 विद्यार्थियों ने सफलता हासिल की, जो सरकारी स्कूलों की एक बड़ी उपलब्धि है।

उन्होंने श्री प्रधान को बताया कि हरियाणा खेलों का पावर हाउस बन चुका है। यहाँ के खिलाड़ी राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय खेल-प्रतियोगिताओं में पदक जीतकर देश का नाम रोशन कर रहे हैं। हमारे खिलाड़ी और अधिक पदक जीतें, इसी को ध्यान में रखकर स्कूलों में खेलों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

उन्होंने केंद्रीय मंत्री को बताया कि सरकारी स्कूलों को ढाँचागत रूप से मजबूत करने का काम किया जा रहा है। विज्ञान और इंजीनियरिंग क्षेत्रों में छात्राओं को आगे बढ़ाने के लिए कल्पना चावला छात्रवृत्ति योजना चलाई गई है।

-शिक्षासारथी डेस्क

हरियाणा में डिजिटल शिक्षा का नया युग

मुख्यमंत्री ने की कुरुक्षेत्र से स्मार्ट टीवी शिक्षा परियोजना की शुरुआत, वितरित किए स्मार्ट टीवी

डॉ.सुदेश रानी

हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए बच्चों को तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ अच्छे संस्कार और नैतिक मूल्यों की शिक्षा देना बेहद जरूरी है, इसलिए डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए 10वीं से 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों को 5 लाख टैबलेट, लगभग 40 हजार कक्षाओं में डिजिटल बोर्ड तथा 1201 आईसीटी लैब स्थापित की गई हैं। इतना ही नहीं, विद्यार्थियों को अच्छे संस्कार और नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने के लिए प्रदेश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को भी प्राथमिकता के आधार पर लागू किया है।

मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी 30 जुलाई को कुरुक्षेत्र जिले के लाडवा में सम्पर्क फाउंडेशन व शिक्षा विभाग के तत्वावधान में आयोजित स्मार्ट क्लास विस्तार कार्यक्रम में बोल रहे थे।

इससे पहले, मुख्यमंत्री ने प्रोग्राम ब्रोशर का विमोचन किया। इसके अलावा, मुख्यमंत्री ने लाडवा से प्रदेशव्यापी स्मार्ट टीवी शिक्षा परियोजना का शुभारंभ भी किया। उन्होंने कुछ विद्यालयों को स्मार्ट टीवी वितरित किए। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने सम्पर्क फाउंडेशन के अधिकारियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रदेश में बच्चों को डिजिटल रूप से शिक्षा देने की दिशा में एक नई पहल की जा रही है।

उन्होंने कहा कि सम्पर्क फाउंडेशन ने प्रदेश के 7 हजार विद्यालयों में संपर्क टीवी बॉक्स दिए हैं, जिसमें हरियाणा की पाठ्य-पुस्तकों के सिलेबस को डिजिटल तरीके से वीडियो, वर्कशीट और असेसमेंट की प्रक्रिया दी गई है। इसके साथ ही, 1485 विद्यालयों को एलईडी टीवी देकर स्मार्ट क्लास के रूप में विकसित किया गया है। इनसे बच्चों के पढ़ने की प्रक्रिया सरल और रोचक बनेगी। इसके साथ ही लाडवा व बाबैन खंड के 132 विद्यालयों को एलईडी टीवी देकर स्मार्ट क्लास के रूप में विकसित किया गया है।

श्री सैनी ने कहा कि शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा शक्तिशाली माध्यम है, जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के भविष्य को गढ़ता है। जैसे-जैसे दुनिया डिजिटल हो रही है, वैसे-वैसे शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक है। ऐसे में यह बहुत जरूरी हो गया है कि हम अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण डिजिटल शिक्षा से जोड़ें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हरियाणा सरकार की भी सोच हमेशा से यह रही है कि हर बच्चा शिक्षित हो, तकनीक से जुड़ा हो ताकि वह वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम बन सके। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के डिजिटल इंडिया मिशन से प्रेरित होकर हरियाणा सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में कई अभूतपूर्व पहलें की हैं। राज्य के सभी 22 जिलों में अटल टिंकरिंग लैब्स स्थापित की गई हैं, 5 हजार से अधिक स्कूलों को वाई-फाई कनेक्टिविटी दी गई है। ई-लर्निंग के माध्यम से कोविड के समय भी बच्चों की पढ़ाई को बाधित नहीं होने दिया था।

सम्पर्क फाउंडेशन के संस्थापक विनीत नायर ने मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी का स्वागत करते हुए कहा कि फाउंडेशन बच्चों को तकनीकी रूपसे सक्षम बनाने का काम कर रही है। इस संस्था का प्रयास है कि बच्चों में सीखने की उत्सुकता पैदा की जाए और एप्लीकेशन आफ नॉलेज पर फोकस रखकर शिक्षा दी जाए। इसके लिए लगभग 7 हज़ार स्कूलों को स्मार्ट स्कूल बनाया जा चुका है।

हिंदी अध्यापिका
राजकीय माध्यमिक विद्यालय, सैक्टर-25
पंचकूला

सतपुड़ा के जंगलों ने सुनाया जीवन का राग

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों की 775 छात्राओं ने लिया नेशनल एडवेंचर एंड स्टडी कैंप में भाग

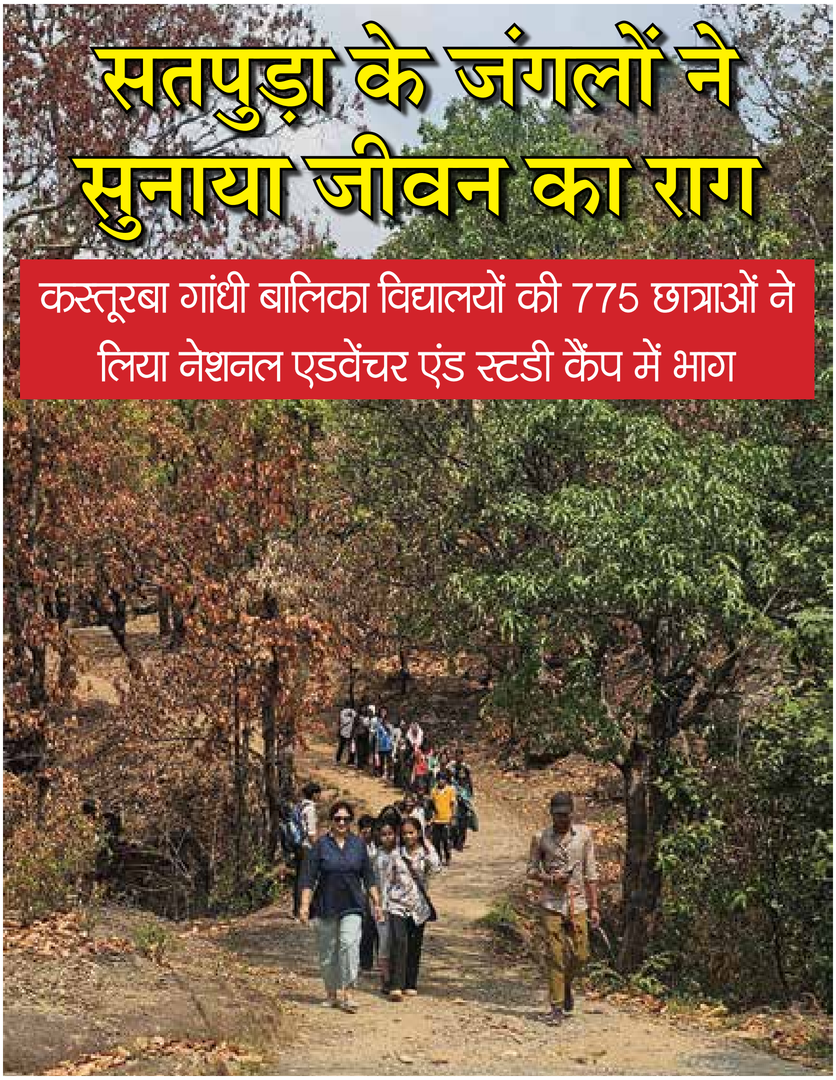

संदीप कुमार

हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्, पंचकूला के अंतर्गत यूथ एंड इको क्लब फॉर मिशन लाइफ कार्यक्रम के तहत हरियाणा प्रदेश के कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों से कक्षा छठी से बारहवीं तक की कुल 775 प्रतिभाशाली बालिकाओं का चयन किया गया। इन बालिकाओं को तीन समूहों में, विद्यालयवार एक-एक एस्कॉर्ट टीचर के साथ भेजा गया।

नेशनल एडवेंचर इंस्टीट्यूट, पचमढ़ी में यह शिविर तीन अलग-अलग चरणों में आयोजित किया गया, जिसमें हरियाणा के कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों से प्रत्येक विद्यालय से 22 छात्राओं का चयन कर एक एस्कॉर्ट टीचर सहित प्रतिभागिता सुनिश्चित की गई। हरियाणा के कुल 22 जिलों में से प्रथम समूह में नूँह, पलवल और पानीपत; द्वितीय समूह में सिरसा, महेंद्रगढ़, भिवानी एवं कैथल; तथा तृतीय समूह में फतेहाबाद, हिसार व जींद जिलों की छात्राओं को सम्मिलित किया गया। इन छात्राओं ने विभिन्न साहसिक एवं प्रकृति से जुड़ी गतिविधियों में भाग लिया।

सतपुड़ा के घने जंगलों के मध्य स्थित नेशनल एडवेंचर इंस्टीट्यूट, पचमढ़ी में हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा भेजी गई इस टीम ने कई रोमांचक गतिविधियों में उत्साहपूर्वक सहभागिता की। निःसंदेह, पचमढ़ी प्राकृतिक रूप से एक हरी-भरी, शांतिपूर्ण और सुकूनदायक जगह है। यहाँ पहुँचते ही कवि भवानी प्रसाद मिश्र की प्रसिद्ध पंक्तियाँ सतपुड़ा के घने जंगल... ऊँघते से अनमने से, नींद में डूबे हुए से...मन में गूँजने लगती हैं और इन्हें बार-बार गुनगुनाने का मन करता है। इस शिविर के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रकृति से गहरे जुड़ाव का अवसर मिला। जंगल, पहाड़, झरने और ऐतिहासिक स्थलों के दर्शन के साथ-साथ उन्होंने ज्ञानवर्धक गतिविधियों में भी भाग लिया।

इस कार्यक्रम में दलनायक की भूमिका श्रवण सिंह, विज्ञान अध्यापक, राजकीय मिडिल स्कूल पनौरी, करनाल ने निभाई। उनके साथ आयोजन समिति में श्रीमती गीता दहिया नरवाल, पीजीटी-रसायन शास्त्र, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भैणी खुर्द, करनाल; संदीप कुमार, पीजीटी -ललित कला, राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नलवा, हिसार; संजीव कुमार, पीजीटी-संस्कृत, राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, काछवा, करनाल; तथा सुशील कुमार, प्राथमिक शिक्षक, राजकीय प्राथमिक पाठशाला, जानी, करनाल, सम्मिलित रहे।

पचमढ़ी स्थित यह नेशनल एडवेंचर इंस्टीट्यूट, भारत स्काउट और गाइड्स का मुख्य प्रशिक्षण केंद्र भी है। अतः इस शिविर में छात्राओं और एस्कॉर्ट शिक्षकों को स्काउट एवं गाइडिंग के इतिहास, मूल्यों और संरचना की विस्तृत जानकारी दी गई। उन्हें यह भी बताया गया कि किस प्रकार विद्यार्थी स्काउटिंग के माध्यम से अपने भविष्य को बेहतर दिशा दे सकते हैं। यह भी साझा किया गया कि एडवेंचर-नेचर स्टडी कैंप विद्यार्थियों की विलक्षण

प्रतिभाओं को निखारने, नेतृत्व क्षमता विकसित करने तथा जीवन में सफलता के नए आयाम खोलने का मंच है।

शिविर की यात्रा का शुभारंभ हज़रत निज़ामुद्दीन रेलवे स्टेशन, दिल्ली से हुआ, जहाँ सभी प्रतिभागी छात्राएँ एवं एस्कॉर्ट शिक्षक नियत समय पर एकत्रित हुए। दिल्ली से पिपरिया रेलवे स्टेशन तक का सफर श्रीधाम एक्सप्रेस द्वारा तय किया गया। अनुभवी दल नायक और आयोजन टीम ने इस पूरे यात्रा क्रम को योजना बद्ध, अनुशासित और सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न कराया। सभी प्रतिभागी सकुशल पिपरिया स्टेशन पहुँचे। यहाँ से पचमढ़ी स्थित एडवेंचर इंस्टिट्यूट तक विद्यार्थियों को विभाग द्वारा बसों की सुविधा प्रदान की गई। ठंडी हवाओं और हरियाली से सजे पचमढ़ी के घुमावदार रास्तों पर चलती बसें मानो एक अलग ही अनुभव दे रही थीं। लगभग 40 मिनट की इस यात्रा के बाद प्रतिभागी दल ने नेशनल एडवेंचर इंस्टिट्यूट, पचमढ़ी में प्रवेश किया।

रहने की व्यवस्था टेंट में की गई थी, जो छात्राओं और शिक्षकों के लिए एक बिल्कुल नया और रोमांचक अनुभव था। अपनी दैनिक जीवनशैली से भिन्न यह तंबू जीवन धीरे-धीरे सभी को भाने लगा और पूरा दल उस वातावरण में सहजता से घुल-मिल गया। पहले दिन पंजीकरण की औपचारिकता के बाद सभी प्रतिभागी कैंप फायर सर्कल

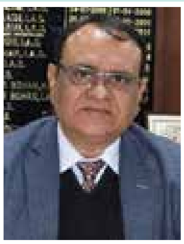

साहसिक एवं प्रकृति अध्ययन शिविरों का उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों को केवल शैक्षणिक ही नहीं, बल्कि जीवनोपयोगी और अनुभवजन्य शिक्षा से जोड़ना भी रहता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी-2020) में शैक्षिक विकास के साथ-साथ मानसिक, सामाजिक और शारीरिक विकास को समान महत्त्व दिया गया है। ऐसे शिविर 'करते हुए सीखना' और समग्र व जिज्ञासाधारित अधिगम जैसे सिद्धांतों को जीवंत करते हैं। ट्रेकिंग, समूह चुनौतियों और सांस्कृतिक संवाद निर्णय क्षमता, आत्मविश्वास, टीमवर्क और नेतृत्व जैसे जीवन कौशलों को मज़बूती देते हैं। पुस्तकीय ज्ञान से परे ये शिविर व्यावहारिक जीवन के लिए उपयुक्त कौशलों से विद्यार्थियों को संपन्न करते हैं। प्राकृतिक और सांस्कृतिक अनुभवों ने उनमें संतुलन, सादगी और आत्म-चिंतन की भावना को गहराते हैं। इस प्रकार ये शिविर शिक्षा में नवाचार और व्यावहारिकता का प्रेरक उदाहरण बनते हैं, जो हमारी शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रासंगिक, मानवीय और समग्र बनाते हैं।

जितेंद्र कुमार
निदेशक माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा व
राज्य परियोजना निदेशक
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्

राष्ट्रीय साहसिक एवं प्रकृति प्रशिक्षण शिविर पुस्तकीय सीमाओं को पार करते हुए अनुभव आधारित सीख का प्रेरक मंच बना। प्रकृति और सांस्कृतिक परिवेश में समूह गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व, निर्णय क्षमता और टीमवर्क जैसे कौशल विकसित हुए। शिक्षा को व्यावहारिक, व नवाचारी रूप देते हुए इस शिविर ने 'सीखने के लिए करना' को सार्थक रूप में प्रस्तुत किया। सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने परस्पर सम्मान और संवेदन शीलता को बढ़ावा दिया, जबकि प्रकृति के सान्निध्य ने आत्म-अनुशासन, धैर्य और पर्यावरणीय चेतना को सुदृढ़ किया। इस शिविर ने यह दर्शाया कि प्रभावी शिक्षा वह होती है जो केवल ज्ञान नहीं देती, बल्कि उसे समझने, आत्मसात् करने और जीवन में लागू करने का मार्ग भी दिखाती है। इस कार्यक्रम ने भविष्य की शिक्षा के लिए एक व्यावहारिक और सशक्त आधार प्रस्तुत किया है।

डॉ. मयंक वर्मा
संयुक्त राज्य परियोजना निदेशक
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्

पचमढ़ी में आयोजित राष्ट्रीय साहसिक एवं प्रकृति अध्ययन शिविर मेरे लिए केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक गहन शिक्षण यात्रा थी। एक आयोजक के रूप में मैंने यह सुनिश्चित किया कि प्रतिभागी छात्र एवं शिक्षक प्रकृति से सीधे जुड़ें और शिक्षा को अनुभव के रूप में आत्मसात् करें। ट्रेकिंग, साहसिक खेल और सांस्कृतिक गतिविधियाँ केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि आत्म-विश्वास, नेतृत्व व टीमवर्क का अभ्यास भी थीं। अनुभवात्मक शिक्षा ने प्रतिभागियों में संवाद क्षमता, सहनशीलता और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया। मैंने जाना कि एक आयोजक का कार्य केवल कार्यक्रम चलाना नहीं, बल्कि प्रतिभागियों के अनुभवों को प्रेरणादायक बनाना है। जब उद्देश्य स्पष्ट हो और समर्पण गहरा, तो हर चुनौती अवसर बन जाती है। यह शिविर मेरे लिए एक नई ऊर्जा और प्रतिबद्धता का स्रोत बना।

डॉ. धीरज कौशिक
कंसल्टेंट
स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद, पंचकूला, हरियाणा

पचमढ़ी में आयोजित शिविर मेरे जीवन का सबसे अविस्मरणीय अनुभव रहा। यह केवल यात्रा नहीं, बल्कि आत्मा को स्पर्श करने वाला एक भावनात्मक अनुभव था। घने वनों के बीच विद्यार्थियों के साथ समय बिताना आनंद को कई गुना बढ़ा गया। वहाँ की संस्कृति, खानपान, भाषा और लोगों की सरलता ने मनुष्य और प्रकृति के बीच गहरे संतुलन का अनुभव कराया। प्रतिभागियों व स्टाफ का व्यवहार एक परिवार जैसा था। हर गतिविधि में सहभागिता और सहयोग स्पष्ट झलकता था। सात दिनों ने यह सिखाया कि जब दृष्टिकोण सकारात्मक हो तो सांस्कृतिक, भाषाई और भौगोलिक अंतर भी दूरी नहीं बनाते। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे इस शिविर का भाग बनने का अवसर मिला।

गीता दहिया नरवाल
पीजीटी रसायन विज्ञान
रावमा विद्यालय, भैणी खुर्द, करनाल

में एकत्र हुए। यहाँ नेशनल एडवेंचर इंस्टिट्यूट, पंचमढ़ी के अधिकारियों, ट्रेनर्स, स्टेट ऑर्गेनाइजिंग टीम और प्रतिभागियों के बीच विस्तृत परिचय का सत्र आयोजित हुआ। इस परिचय के साथ ही दल एक पारिवारिक स्वरूप लेने लगा।

शाम को सभी प्रतिभागियों को राजेंद्र गिरी उद्यान की सैर करवाई गई, जहाँ प्रकृति की गोद में रहकर सहजता का अनुभव हुआ। यह उद्यान भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद की स्मृति में विकसित किया गया है, जहाँ उनकी प्रतिमा और उनके द्वारा लगाया गया वृक्ष आज भी प्रेरणास्रोत हैं। बताया गया कि डॉ. प्रसाद पचमढ़ी स्वास्थ्य लाभ हेतु नियमित आते थे। इस स्थल से सूर्यास्त देखना एक अद्भुत अनुभव था। राजेंद्र गिरी से लौटकर कैंप फायर कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसने दिनभर की थकान को समाप्त कर सभी को नई ऊर्जा से भर दिया। इस अवसर पर कैंप में होने वाली आगामी गतिविधियों की संपूर्ण जानकारी प्रतिभागियों को दी गई।

इस कार्यक्रम को विभिन्न गतिविधियों द्वारा न केवल रुचिकर, अपितु शैक्षणिक रूप से भी समृद्ध बनाया गया। शिविर में अनेक क्रियाओं का आयोजन हुआ, परंतु मुख्य रूप से इसमें तीन प्रमुख आयाम सम्मिलित रहे :

1. एडवेंचर गतिविधियाँः प्रकृति के साथ साहस की पाठशाला

शिविर में छात्राओं ने प्रतिदिन विविध साहसिक गतिविधियों में भाग लिया, जिनसे उन्हें आत्मविश्वास, टीमवर्क और मानसिक दृढ़ता की सीख मिली।

- » रॉक क्लाइंबिंग में छात्राओं ने चट्टानों पर चढ़ते हुए साहस, संतुलन और आत्म-विश्वास का अभ्यास किया।
- » रैपलिंग के माध्यम से ऊँचाई से उतरने की कला सीखी, जो धैर्य और मानसिक संतुलन का परिचय देती है।
- » बोट राइडिंग चंपक लेक में आयोजित की गई, जहाँ छात्राओं ने जल सुरक्षा, संतुलन और प्रकृति के साथ सामंजस्य का अनुभव किया।
- » ट्रेकिंग के दौरान छात्राएँ सतपुड़ा की घाटियों से होते हुए रमणीय स्थलों जैसे रीछगढ़, रम्यकुंड, जटाशंकर व पांडव गुफा तक पहुँचीं। इसने पर्यावरण के प्रति जुड़ाव और सहनशीलता को विकसित किया।
- » पैरासिलिंग, रोप साइक्लिंग, जिपलाइनिंग, कमांडोनेट और बर्मा-ब्रिज जैसी रोमांचकारी गतिविधियों में भाग लेकर छात्राओं ने अपने डर को पार किया और सामूहिकता, एकाग्रता, संतुलन जैसी दक्षताएँ प्राप्त कीं।

इन सभी गतिविधियों ने छात्राओं में नेतृत्व क्षमता, समस्या समाधान, आत्मनिर्भरता और प्राकृतिक जुड़ाव जैसे गुणों को मज़बूती दी।

2. सांस्कृतिक कार्यक्रमः विविधता में एकता का उत्सव

प्रत्येक शाम कैंप फायर के चारों ओर छात्राएँ अपने जिलों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ एकत्र होतीं।

पचमढ़ी शिविर में कंटिंजेंट लीडर के रूप में भाग लेना मेरे लिए आत्म-विकास और नेतृत्व की अद्वितीय यात्रा रही। ट्रेकिंग और समूह गतिविधियों ने यह दिखाया कि सामूहिक प्रयासों से कठिन चुनौतियाँ भी आसान हो जाती हैं। प्रतिभागियों ने समर्पण और सहयोग से हर गतिविधि को सफल बनाया। एक लीडर के रूप में मेरा उद्देश्य यह था कि सभी सदस्य अपने अनुभवों को अधिकतम रूप से आत्मसात् करें। नेतृत्व केवल दिशा देना नहीं, बल्कि सहभागी बनकर टीम के साथ आगे बढ़ना भी है। जंगल की विशालता और सांस्कृतिक सादगी ने यह सिखाया कि जीवन में सादगी और सहयोग कितना महत्त्वपूर्ण है। यह अनुभव भविष्य के नेतृत्व के लिए एक स्थायी प्रेरणा बन गया।

श्रवण सिंह
विज्ञान शिक्षक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय पनौरी, ज़िला-करनाल

पचमढ़ी में आयोजित शिविर में बतौर रिसोर्स पर्सन भाग लेना मेरे लिए गौरवपूर्ण रहा। यहाँ छात्रों और शिक्षकों ने प्रकृति के करीब आकर ज्ञान और अनुभव का अद्भुत संगम देखा। प्रत्येक दिन रोमांच, ट्रेकिंग और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से भरा रहा। इस यात्रा में आत्म-विश्वास, अनुशासन और सहयोग की भावना ने प्रत्येक प्रतिभागी को सशक्त किया। आयोजन टीम का प्रबंधन अत्यंत सराहनीय रहा, जिससे सभी गतिविधियाँ सुरक्षित और प्रभावी ढंग से सम्पन्न हुईं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने भारत की विविधताओं को जानने और समझने का अवसर दिया। यह शिविर सिर्फ एक रोमांचक यात्रा नहीं, बल्कि संवेदनशीलता, संतुलन और आत्म-चिंतन से जुड़ी एक सीख थी, जो जीवन में स्थायी प्रभाव छोड़ती है।

संजीव कुमार
पीजीटी संस्कृत
राआसंवमा विद्यालय, काछवा, करनाल

लोकनृत्य, गीत, नाटक, शायरी और कविताओं के माध्यम से हरियाणा की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाया गया। छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश जैसे अन्य राज्यों के प्रतिभागियों से संवाद कर छात्राओं ने उनकी संस्कृति और व्यवहार को भी जाना। हरियाणवी लोक परिधान -दामन, कुर्ता आदि पहनकर दी गई प्रस्तुतियाँ विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान छात्राओं के आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति कौशल और आपसी समझ को समृद्ध करने वाला रहा।

3. स्थानीय खेलः परंपरा में छिपे कौशल

शिविर में छुपम-छुपाई, बारह कक्कर, रस्साकशी, आँखमिचौली, पोशांपा, ऊँच-नीचकापापड़ा, स्पूनरेस, तीनटांगरेस, पिट्ठू, लट्टू आदि खेलों का आयोजन हुआ। पारंपरिक खेल न केवल मनोरंजन का माध्यम हैं, बल्कि ये बच्चों के समग्र विकास में भी सहायक होते हैं। इन खेलों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये सुलभ और संसाधनहीन होते हैं। इनमें किसी विशेष उपकरण या मैदान की आवश्यकता नहीं पड़ती, बल्कि घर में उपलब्ध सामान से ही इन खेलों में प्रयुक्त होने वाले साधन सहज रूप से जुटाए जा सकते हैं। पारंपरिक खेल बच्चों को भारतीय सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक परंपराओं से जोड़ते हैं, जिससे वे अपने इतिहास, रीति-रिवाज और मूल्यों से जुड़ाव महसूस करते हैं। साथ खेलने की प्रवृत्ति से उनमें सहयोग, प्रतिस्पर्धा और नेतृत्व की भावना का विकास होता है। यह खेल समूह में सहभागिता बढ़ाकर विद्यार्थियों को सामाजिक रूप से सुदृढ़, संवेदनशील और अनुशासित बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, पारंपरिक खेल बच्चों को डिजिटल दुनिया की कृत्रिमता से निकालकर प्रकृति के समीप ले आते हैं, जिससे उन्हें मानसिक और शारीरिक संतुलन प्राप्त होता है। इन खेलों के माध्यम से बच्चों को तनावमुक्त, आनंददायक और सक्रिय जीवन शैली अपनाने की प्रेरणा मिलती है, जो आज के दौर में अत्यंत आवश्यक है।

4. ज्ञानवर्धक भ्रमणः प्रकृति, संस्कृति और इतिहास का जीवंत संगम

शिविर के दौरान विद्यार्थियों को केवल साहसिक गतिविधियों तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि उन्हें प्राकृतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों का सजीव अनुभव भी कराया गया। किताबों में जो विषय अब तक केवल अक्षरों और चित्रों के रूप में उनके समक्ष थे, वे इस भ्रमण में वास्तविकता बनकर उनके सामने उपस्थित हुए। जंगलों, पहाड़ियों, झीलों, झरनों और नदियों के बीच की गई ट्रैकिंग ने छात्राओं को पारिस्थितिकी तंत्र को प्रत्यक्ष देखने और समझने का एक अनमोल अवसर दिया। उन्होंने वनस्पति, चट्टानों, जीव-जंतुओं तथा उनके पारस्परिक संबंधों को प्रकृति की गोद में जाकर स्वयं महसूस किया और सीखा। यह अनुभव कक्षा के पाठ्यक्रम से कहीं अधिक प्रभावशाली और स्थायी सिद्ध हुआ।

शैक्षिक यात्रा के अंतर्गत छात्राओं को पंचमढ़ी के प्रसिद्ध प्राकृतिक, पौराणिक और धार्मिक स्थलों पर ले जाया गया, जहाँ उन्होंने न केवल पर्यावरण के विविध रूपों को देखा बल्कि भारतीय संस्कृति की गहराइयों को भी महसूस किया।

बी फॉल, पचमढ़ी

यह झरना लगभग 35मीटर (150फीट) ऊँचाई से गिरता है, जिसे स्थानीय रूप से जमुना प्रपात भी कहा जाता है। शोरगुल बढ़ाने वाली जलधारा की आवाज़ 'बी फ्लो' ('भँवरा-सी) गूँजती है, और इसे प्राकृतिक नहाने का स्थल भी माना जाता है। यह झरना प्रकृति की विराटता और सौंदर्य का अद्वितीय उदाहरण है। यहाँ गिरती जलधारा की गूँज, ताज़ी हवा और हरियाली ने छात्राओं को प्रकृति की शक्ति और उसके जीवन दायिनी स्वरूप से परिचित कराया। कई छात्राओं ने पहली बार किसी झरने को इतनी नज़दीक से देखा और उसकी ठंडी फुहारों को

मध्य भारत का पचमढ़ी शिविर एक अद्भुत अनुभव रहा, जहाँ हर दिन प्रकृति और संस्कृति की नई कहानी कहता था। घने जंगलों में ट्रेकिंग और साहसिक खेलों ने यह सिखाया कि समर्पण से किया गया प्रयास हमेशा गुणा होकर लौटता है। समूह की चुनौतियों ने नेतृत्व, सहयोग और आत्मविश्लेषण को मज़बूती दी। शिविर में उत्तर और मध्य भारत की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने विविधता में एकता को परिभाषित किया। कार्यक्रम का हर हिस्सा सुव्यवस्थित और प्रेरक था। यह शिविर केवल शैक्षणिक नहीं, बल्कि जीवन को देखने, समझने और अपनाने की कला सिखाने वाला अनुभव था। पचमढ़ी की शांत प्रकृति ने यह सिखाया कि जीवन में सादगी, समझ और सहयोग ही सच्ची समृद्धि का मूल है।

मंजू
पीजीटी गणित
रावमा विद्यालय खरहर, झज्जर

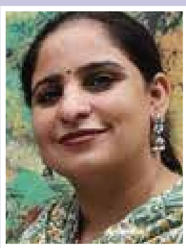

पचमढ़ी में आयोजित साहसिक एवं प्रकृति अध्ययन शिविर मेरे लिए अत्यंत प्रेरणादायक और रोमांचकारी रहा। प्रकृति की गोद में रहकर छात्रों और शिक्षकों ने जीवन, संस्कृति और पर्यावरण को प्रत्यक्ष अनुभव किया। ट्रेकिंग, साहसिक खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों ने आत्म-विश्वास, अनुशासन और सहयोग की भावना को सुदृढ़ किया। आयोजन टीम का समर्पण और व्यवस्था सराहनीय थी। हर गतिविधि सुरक्षितऔर सुचारु रूप से संपन्न हुई। सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने उत्तर और दक्षिण भारत की विविधताओं को समझने का अवसर दिया, जो 'विविधता में एकता' की सजीव मिसाल बनी। यह अनुभव न केवल प्रकृति के करीब लाया, बल्कि इसने हमें पुस्तक में पढ़ी बातों को सजीव रूप में समझने का अवसर भी प्रदान किया। यह मेरे जीवन की एक अनमोल यात्रा थी।

अमनदीप बराड़
शिक्षिका, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय
रत्ताखेड़ा, सिरसा

महसूस किया।

रीछगढ़, पचमढ़ी

यह 400 मीटर लंबी प्राकृतिक गुफा है, जिसे नाम 'रीछ' यानी भालू के कारण मिला, क्योंकि माना जाता है कि यहाँ कभी भालू रहते थे। इसकी दोनों छोरों पर खुली छत है और अंदर ठंडी हवा चलती रहती है, जिससे यह प्राकृतिक आदिवासी निवास के अनुकूल स्थान बन गया। यह स्थान एक प्राचीन गुफा एवं किले के रूप में जाना जाता है। यहाँ की ट्रैकिंग रोमांचक होने के साथ-साथ ऐतिहासिक दृष्टि से भी समृद्ध थी।

चौरागढ़, पचमढ़ी

एक पहाड़ी धार्मिक स्थल है, जहाँ तक पहुँचने हेतु कठिन चढ़ाई करनी होती है। यह स्थल श्रद्धा और साहस को आग्रह करता है। यात्रियों को चढ़ाई में भक्ति और स्थिरता का अनुभव होता है। जब छात्राएँ वहाँ पहुँचीं, तो न केवल भक्ति में डूबीं, बल्कि उन्होंने आत्मबल, संयम और लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता की सच्ची अनुभूति भी की। यहाँ की आध्यात्मिक शांति ने उन्हें आत्मचिंतन और मानसिक शुद्धि का अनुभव भी कराया।

जटाशंकर, गुप्त महादेव, बड़ा महादेव और काल महादेव गुफाएँ/मंदिर

ये गुफा-आधारित मंदिर स्थल सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टि से समृद्ध हैं, जहाँ छात्राओं ने स्थापत्य, पौराणिक कथाओं और भारतीय संस्कृति की विविधता को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया । यात्रा ने छात्राओं को भारतीय संस्कृति, पौराणिक कथाओं और मंदिर स्थापत्य की विविधता से अवगत कराया। गुफा जैसे मंदिरों की प्राकृतिक बनावट, अंधकार और मौन वातावरण में आस्था और श्रद्धा की गहराई को उन्होंने आत्मसात् किया। इन स्थलों ने उन्हें भारतीय सभ्यता की जड़ों से जोड़ने का कार्य किया।

रेशम निर्माण केंद्र

छात्राओं को रेशम उत्पादन की संपूर्ण प्रक्रिया प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिली। उन्होंने देखा कि कैसे रेशम के कीड़े पत्तियों पर पाले जाते हैं, कोकून बनने की प्रक्रिया क्या होती है और फिर इन कोकूनों से किस प्रकार धागा निकाला जाता है। इसके बाद उसे धोना, रँगना और बुनाई करना किस प्रकार होता है -यह सब उन्हें व्यावहारिक रूप से सिखाया गया। इस अनुभव से छात्राओं को ग्रामीण अर्थव्यवस्था, पारंपरिक कौशल और आत्मनिर्भरता की भावना का गहन बोध हुआ। उन्होंने महसूस किया कि हस्तकला और ग्रामीण उद्योग न केवल आजीविका के साधन हैं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक पहचान के भी अभिन्न अंग हैं।

पीजीटी-ललित कला
राआसंवमा विद्यालय, नलवा, हिसार

रंगों से झलके भाव

पानीपत के बड़ौली विद्यालय की प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा, शिक्षा मंत्री ने की सराहना

अजेंद्र कुंडू

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बड़ौली (पानीपत) में आयोजित कला प्रदर्शनी के माध्यम से विद्यार्थियों ने अपनी नयनाभिराम रचनाओं द्वारा न केवल अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित किया, बल्कि दर्शकों के हृदय को भी छू लिया। यह आयोजन विद्यालय के सांस्कृतिक परिदृश्य में एक यादगार अध्याय बनकर उभरा।

इस विशेष कला प्रदर्शनी का शुभारंभ हरियाणा सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा द्वारा किया गया। पानीपत के उपायुक्त डॉ. वीरेंद्र कुमार दहिया विशिष्ट अतिथि के तौर पर पहुँचे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ समाजसेवी अवतार सिंह शास्त्री ने की। आयोजन का नेतृत्व विद्यालय की तत्कालीन प्राचार्या मधुबाला ने किया, जबकि ललित कला प्राध्यापक प्रदीप मलिक ने पूरे कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

मुख्य अतिथि श्री महीपाल ढांडा ने विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई मनमोहक एवं सजीव कलाकृतियों की सराहना करते हुए कहा कि सरकारी विद्यालयों में इस प्रकार के रचनात्मक आयोजन विद्यार्थियों के आत्मबल और आत्मविश्वास को नई ऊँचाइयों तक ले जाते हैं।

गौरवशाली पलों को महसूस करने का अवसर मिला

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बड़ौली में आयोजित कला प्रदर्शनी में विद्यार्थियों के अद्भुत कौशल और रचनात्मक प्रयासों को देखकर मन अत्यंत हर्षित हुआ। यह देखकर गर्व होता है कि सरकारी विद्यालयों के बच्चे भी अपनी प्रतिभा और परिश्रम से किसी भी मंच पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं। बाल कलाकारों ने जो हुनर प्रस्तुत किया, वह केवल सराहनीय ही नहीं, अपितु अनुकरणीय भी है। उन्होंने न केवल रंगों से चित्र बनाए, बल्कि अपने अंतर्मन के भावों को कैनवास पर उकेरा है, जो उनके भीतर की संवेदनशीलता और कलात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति देखकर प्रतीत होता है कि हमारे सरकारी विद्यालयों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। इस आयोजन ने यह सिद्ध किया है कि यदि अवसर और मार्गदर्शन मिले तो हमारे विद्यार्थी विश्व स्तर पर भी अपनी छाप छोड़ सकते हैं। सफल आयोजन के लिए विद्यालय टीम और विशेष रूप से ललित कला विभाग को मेरी ओर से असीम हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

उन्होंने कहा कि प्रत्येक कलाकृति में छिपा हुआ भाव और रंगों की जीवंतता विद्यार्थियों की रचनात्मकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक कौशल एवं सृजनात्मकता को विकसित करना आज के समय की माँग है। वर्तमान युग कौशल आधारित युग है, जहाँ केवल जानकारी नहीं, बल्कि उसे जीवन में कैसे ढाला जाए, यह अधिक महत्त्व रखता है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन में आगे बढ़ें और निरंतर अपने हुनर को निखारें।

शिक्षा मंत्री ने कला प्रदर्शनी के सफल आयोजन हेतु ललित कला प्राध्यापक प्रदीप मलिक एवं उनकी समर्पित टीम की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि शिक्षा के साथ-साथ इस प्रकार की सांस्कृतिक एवं सृजनात्मक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अत्यंत सहायक होती हैं, जो न केवल उनके हुनर को निखारती हैं, बल्कि उन्हें आत्मविश्वासी बनाती हैं। श्री ढांडा ने यह भी कहा कि सरकारी विद्यालयों में इस प्रकार के प्रयास करना सशक्त नेतृत्व, सद्भावनापूर्ण वातावरण एवं उत्साही शिक्षकों का परिणाम होता है। राज्य सरकार शिक्षा के क्षेत्र में आधारभूत सुधारों एवं नवाचारों को लागू करने के लिए संकल्पबद्ध है। इन्हीं प्रयासों के कारण जनसामान्य का सरकारी शिक्षा प्रणाली पर विश्वास भी पुनः सुदृढ़ हो रहा है।

इस अवसर पर समाजसेवी श्री अवतार सिंह शास्त्री ने कहा कि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा लगाई गई यह कला प्रदर्शनी वास्तव में एक अनूठा एवं प्रेरणादायक प्रयास है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में हरियाणा सरकार शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रही है, जिसके फलस्वरूप राज्य के विद्यालयों की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हो रहा है। यदि विद्यालय के शिक्षक, अभिभावक एवं छात्र एक सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ कार्य करें, तो किसी भी विद्यालय को उत्कृष्टता की ओर ले जाया जा सकता है। उन्होंने विद्यालय के सतत विकास के लिए सरकार एवं ग्रामवासियों से भरपूर सहयोग देने की भी बात कही।

शिक्षा मंत्री श्री ढांडा ने इस अवसर पर विद्यालय के प्रतिभाशाली एवं उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं को मंच पर सम्मानित किया। उपायुक्त पानीपत डॉ. वीरेंद्र कुमार दहिया ने विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई पेंटिंग्स को देखकर उनकी सराहना की तथा सुझाव दिया कि इन

पेंटिंग्स को फ्रेम कर विद्यालय अथवा सरकारी कार्यालयों में प्रदर्शित किया जाए, ताकि विद्यार्थियों की प्रतिभा को उचित सम्मान और पहचान मिल सके।

इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई विशेष कलाकृतियाँ मुख्य अतिथि श्री ढांडा एवं विशिष्ट अतिथि श्री शास्त्री को स्मृति चिह्न स्वरूप भेंट की गईं। कार्यक्रम में मंच-संचालन हिंदी प्राध्यापक रवींद्र सिंह एवं गणित प्राध्यापिका दीपिका धवन ने किया। तत्कालीन प्राचार्या मधुबाला ने समस्त अतिथियों का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह आयोजन विद्यालय के लिए गौरव का क्षण है।

कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य अतिथियों में प्राचार्य सुरेंद्र सिंह, सुमित्रा आर्य, बीरमती धौंचक, प्राचार्य सुनील मलिक, मुख्य शिक्षिका ज्योति चोपड़ा, करतार बड़ौली, बिल्लू पालीवाल, नीतीश मिटान, तेजवीर सिंह, संदीप, सोनू, सुरेंद्र शर्मा, सुरेंद्र राठी, दीपक पाल, लहना सिंह, सुशील कुमारी, सुनीता, सुदेश कुमारी, ममता, रामनरेश, शर्मिला, जसवीर सिंह, जगबीर सिंह, उमेद सिंह, राकेश कुमार, विजेंद्र सिंह, प्रवीण कुमार, रमादेवी, प्रीति दुहन, मौसम देवी, हिना देवी, प्रियंका, ज्योति, सुनील, सतीश व मनीष कुमार आदि शामिल रहे।

पीजीटी अर्थशास्त्र
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
बबैल, पानीपत

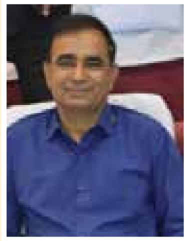

रोजगारोन्मुख शिक्षा की ओर बढ़ते कदम

विद्यालय में आयोजित इस कला प्रदर्शनी के माध्यम से विद्यार्थियों ने विभिन्न कलाकृतियों को प्रदर्शित करते हुए अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया है। इस प्रकार के आयोजन न केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम बनते हैं, बल्कि ये विद्यार्थियों को कला के माध्यम से स्वरोज़गार और व्यावसायिक संभावनाओं की ओर भी अग्रसर करते हैं। बच्चों की उत्कृष्ट कला में उनकी रुचि, साधना और अंतर्निहित क्षमता की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि विद्यार्थियों ने न केवल परंपरागत विषयों पर कार्य किया बल्कि समसामयिक मुद्दों और सामाजिक सरोकारों को भी अपनी कला में समाहित किया। अच्छे और प्रतिभाशाली कलाकारों को तैयार करने वाले ललित कला प्राध्यापक को हृदय से बधाई, जिनके मार्गदर्शन ने बच्चों की प्रतिभा को सही दिशा दी।

डॉ. वीरेंद्र कुमार दहिया
उपायुक्त, पानीपत

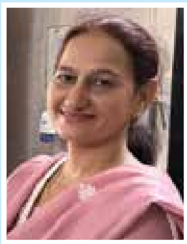

विद्यालय के लिए गौरव की बात

कला प्रदर्शनी के माध्यम से विद्यार्थियों ने जिस आत्मविश्वास और कलात्मक अभिव्यक्ति के साथ अपने कला-भाव को चित्रों में प्रस्तुत किया, वह अत्यंत सराहनीय प्रयास है। यह केवल एक प्रदर्शनी नहीं थी, बल्कि यह विद्यार्थियों की सृजनात्मक यात्रा और उनके अंदर छिपी कला चेतना की अभिव्यक्ति थी। प्रदर्शनी में माननीय शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढाँडा जी का आगमन हमारे लिए अत्यंत गौरव का विषय रहा। उनकी उपस्थिति ने न केवल बच्चों का उत्साह बढ़ाया बल्कि यह भी प्रमाणित किया कि सरकारी विद्यालयों की गतिविधियों को अब राज्य स्तर पर गंभीरता से सराहा जा रहा है। विद्यार्थियों की प्रतिभा को जो सम्मान और सराहना मिली, वह ललित कला विभाग के प्राध्यापकों के समर्पण, मेहनत और दीर्घकालिक अभ्यास का प्रतिफल है।

मधु बाला
तत्कालीन प्राचार्या

सपनों को साकार करने का प्रयास

जब शिक्षक अपने कार्य को केवल पेशा न मानकर सेवा और साधना का माध्यम बना लेते हैं, तो उनके प्रयासों का प्रभाव विद्यार्थियों की आँखों की चमक और आत्मविश्वास में स्पष्ट दिखाई देता है। मैंने जब भी बच्चों से उनकी कलाकृति प्राप्त की, उनके चेहरे पर आत्मीयता और रचनात्मकता का सम्मिलन देखकर एक नवीन ऊर्जा का अनुभव किया। उनकी कल्पना शक्ति और रंगों से खेलने की ललक ने हमें प्रेरित किया कि क्यों न उनके इन स्वप्नों को एक मंच दिया जाए। इस प्रदर्शनी के माध्यम से हमने यह प्रयास किया है कि विद्यार्थियों को केवल कला में पारंगत न बनाया जाए, बल्कि उन्हें अपनी पहचान और आत्मविश्वास की अनुभूति भी करवाई जाए। इस प्रदर्शनी को सफल और प्रभावशाली रूप देने में विद्यालय के डीपीई उमेद सिंह, छात्राएँ नवप्रीत कौर, नेहा, गुंजन, आरती, राखी तथा छात्र सावन और शगुन का विशेष सहयोग रहा। इन सभी ने दिन-रात मिलकर परिश्रम किया और यह सुनिश्चित किया कि प्रदर्शनी प्रत्येक दृष्टिकोण से सफल हो।

प्रदीप मलिक
पीजीटी- ललित कला

शिल्प-संवेदना की यात्रा : उदयपुर कार्यशाला बनी अविस्मरणीय

'विद्यालयी शिक्षा में हस्तकला कौशल का समावेश' विषय पर उदयपुर में 1 से 10 जुलाई, 2025 तक आयोजित हुई राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला

डॉ. शिशुपाल

दिल कहे रुक जा रे, रुक जा यहीं पे कहीं।
जो बात इस जगह है, कहीं पर नहीं।।

उदयपुर की मनमोहक झीलों व मनोरम घाटियों को देखकर यह गीत बरबस होंठों पर आ रहा है। प्रशिक्षण केंद्र छात्रावास की बालकनी से बाहर झाँका तो सामने अद्भुत प्राकृतिक नज़ारा दिखाई दिया- खूबसूरत हरे-भरे पहाड़, पहाड़ों के आकार से प्रतिस्पर्धा करते साँझकालीन सिंदूरी मेघ। तलहटी के घने कानन से प्रतिध्वनित मोरों की मनोरम ध्वनि रह-रहकर मन को आह्लादित कर रही है। तभी आवाज़ आई- नाश्ता तैयार है। आवाज़ का अनुसरण करते हुए सभी साथी कैंटीन की तरफ़ अग्रसर हुए।

इस दस दिवसीय आवासीय कार्यशाला में हरियाणा राज्य से दस शिक्षकों ने भाग लिया। हरियाणा के अलावा बिहार, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, असम व गोवा के शिक्षक भी कार्यशाला में शामिल हुए। हमारी कार्यशाला का विषय था- 'विद्यालयी शिक्षा में हस्तकला कौशल का समावेश'।

ठीक आठ बजे नाश्ता और ठीक नौ बजे लेक्चर हॉल में 'तू ही राम है, तू रहीम है ...' प्रार्थना के साथ कार्यशाला का शुभारंभ। मेरे जीवन की यह पहली ऐसी कार्यशाला है जो पूर्णतः पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार चल रही है। प्रातःकालीन सत्र में अलग-अलग दिन सभी राज्यों के

प्रतिभागियों ने अपने-अपने राज्य की जानकारी पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुत की। सभी ने अलग-अलग निर्धारित दिन स्वयं के राज्य की संस्कृति को प्रस्तुत किया।

बिहार राज्य ने छठ पूजा की सजीव झाँकी प्रस्तुत की। जल में खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य देने के साथ-साथ तमाम रीति-रिवाज प्रदर्शित किए।

महाराष्ट्र राज्य ने विधिवत् गणपति पूजन किया और मधुर मोदक प्रसाद स्वरूप वितरित किए। असम राज्य ने बीहू नृत्य और लोक परंपराएँ प्रदर्शित कीं। मध्य प्रदेश ने लोकनृत्य प्रस्तुत किया और गोवा राज्य ने वहाँ की विशेष वेशभूषा को दर्शाया। प्रत्येक राज्य की प्रस्तुति के बाद उस राज्य के लोकगीतों पर सभी ने मिलकर नृत्य का आनंद लिया। हरियाणा राज्य की ओर से विवाह संबंधी लोकाचार प्रस्तुत किए गए। बान बिठाणा, तेल चढ़ाणा, भात, सेहरा, बारात, फेरे, विवाह अवसर के गीत व नृत्य प्रस्तुत किए गए। 'हट ज्या ताऊ पाछै नै' गीत पर सबने मिलकर नृत्य किया और विवाह के लड्डू भी बाँटे गए।

प्रतिदिन प्रातः 10 बजे कार्यशाला में विषय विशेषज्ञों का आगमन होता और कार्यशाला प्रभारी श्री अभीक सरकार उनका परिचय करवाते। प्रत्येक दिन एक से बढ़कर एक विषय विशेषज्ञ आमंत्रित किए गए थे, जिन्होंने विविध और विचारोत्तेजक विषयों पर अपने उच्च स्तरीय विचार प्रस्तुत किए। डॉ. मोहन प्रकाश शर्मा ने 'सांस्कृतिक शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका नई शिक्षानीति, 2020 के संदर्भ में' तथा 'बुनियादी शिक्षा में गांधीवादी दर्शन' विषयों पर सारगर्भित विचार रखे। श्री भार्गव मिस्त्री ने 'भारतीय हस्तशिल्प पर सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव', श्री अजय चौधरी ने 'राजभाषा नीति और उसकी संवैधानिक स्थिति', डॉ. बसंत कश्यप ने 'भारतीय समाज में शिल्पकारों की भूमिका और भारतीय कला को बढ़ावा

देने में उनका महत्त्व' विषय को व्यापक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। इसी क्रम में डॉ. देवेंद्र सिंह चौहान ने 'स्वच्छ भारत पर चर्चा व टिकाऊ पर्यावरणीय प्रथाओं के लिए पारंपरिक शिल्प का उपयोग', डॉ. नीलांजन खटुआ ने 'भारत की शिल्प परंपराओं के विशेष संदर्भ में मूल्य-शिक्षा' और डॉ. डोली मोगरा ने 'भारतीय हस्तशिल्प का सौंदर्य-बोध' विषय पर अत्यंत प्रेरणादायक और गहन व्याख्यान दिया। प्रत्येक वक्ता विषय की गहराई में जाकर तथ्यों और आँकड़ों के साथ पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुति देता रहा, जिससे सहभागियों को विषय-वस्तु को दृष्टिगत करने में सुगमता हुई। इन विद्वज्जनों के संपर्क से भारतीय हस्तशिल्प कलाओं के प्रति एक नवीन और विवेकपूर्ण दृष्टिकोण का उद्भव हुआ, जो शिक्षण प्रक्रिया में गहराई से जुड़ने की प्रेरणा देता है।

दो दिन डॉ. प्रेम भंडारी ने संगीत सत्र संचालित किए, जिनमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के गीत सिखाए गए। बिहारी, राजस्थानी, महाराष्ट्रीय, पंजाबी गीत सबकी जुबान पर चढ़ गए। सबको एक सूत्र में पिरोने वाला गीत 'हिंद देश के निवासी, सब जन एक हैं' सभी बाद में गुनगुनाते नज़र आए।

सभी राज्यों को हस्तशिल्प विषय पर अलग-अलग प्रोजेक्ट कार्य सौंपे गए, ताकि प्रतिभागी अपने-अपने क्षेत्र की पारंपरिक कलाओं का अध्ययन कर सकें। बिहार राज्य के प्रतिभागियों ने मधुबनी चित्रकला पर सुंदर और विस्तृत प्रोजेक्ट तैयार किया, जबकि महाराष्ट्र के प्रतिभागियों ने अपनी समृद्ध परंपरा को दर्शाते हुए वरली चित्रकला पर कार्य किया। हरियाणा के प्रतिभागियों को हरियाणा में लुप्त होती हस्तकलाएँ विषय मिला, जिस पर उन्होंने गहन शोध करते हुए बीजणे, बिटोड़े, हथचक्की, कुंडी, सूत कताई, साँझी, सरकंडा-कला, फुलकारी, मृदभांड और भित्ति-चित्र जैसी प्राचीन कलाओं की जानकारी एकत्र की। इस परियोजना कार्य ने न केवल इन पारंपरिक विधाओं के महत्त्व को उजागर किया, बल्कि प्रतिभागियों को यह एहसास भी कराया कि समय के साथ विलुप्त हो रही इन कलाओं को पुनर्जीवित करना हम सबकी जिम्मेदारी है।

पूरी कार्यशाला का प्राणभूत कार्यक्रम परंपरागत शिल्प को सीखना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अलग-अलग विधाओं के स्थानीय परंपरागत शिल्पकारों को प्रतिदिन आमंत्रित किया गया। तीन घंटे की व्यावहारिक कक्षाओं में प्रतिभागियों को समूहों में बाँटकर स्थानीय शिल्प विधाओं का अभ्यास कराया गया। मोलेला आर्ट सिखाने के लिए श्री प्रशांत कुम्हार आए, जिन्होंने मृत्तिका मूर्तिकला की पारंपरिक शैली से अवगत कराया। टाई एंड डाई की रंग-बिरंगी दुनिया में ले जाने का कार्य श्री हारून रशीद मुल्तानी ने किया, जहाँ कपड़ों को बाँधकर विशेष तकनीक से रंगों में डुबोकर सुंदर आकृतियाँ बनाई गईं।

नक्काशी और लकड़ी पर सजावटी कलाकारी का अभ्यास श्री गिरीश भाई और श्री अमृत भाई परमार के मार्गदर्शन में हुआ। वहीं, सुश्री पंकज कुमारी मालवीय ने प्राकृतिक अपशिष्ट से खिलौने निर्माण की कला सिखाई, जिसमें सूखे पत्तों, बीजों और प्राकृतिक अवशेषों से सुंदर सजावटी वस्तुएँ और खिलौने बनाए गए। इन शिल्प कक्षाओं के दौरान सभी प्रतिभागियों ने जब अपने हाथों से नई-नई वस्तुएँ बनाईं, तो एक अनोखा रोमांच और आत्म-संतोष का अनुभव हुआ। सभी ने महसूस किया कि यदि ये शिल्प विधाएँ कक्षा में विद्यार्थियों को भी सिखाई जाएँ, तो उनकी रचनात्मकता, अभिव्यक्ति क्षमता और सांस्कृतिक जुड़ाव निश्चित रूप से बढ़ेगा।

अपने हाथों से नए-नए शिल्प बनाकर अद्भुत रोमांच का अनुभव हुआ। यह अनुभव विद्यार्थियों से शिल्प कार्य करवाते समय और भी जीवंत होगा, ऐसा सभी को आभास हुआ। 5 जुलाई, शनिवार को श्री अभीक सरकार के नेतृत्व में सांस्कृतिक रूप से समृद्ध उदयपुर के विविध स्थलों का शैक्षिक भ्रमण किया गया, हस्तशिल्प संग्रहालय, भारतीय लोक कलामंडल, शिल्पग्राम, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण संग्रहालय। शिल्पग्राम में विभिन्न राज्यों के पारंपरिक आवास, रीति-रिवाज और लोककलाओं को सजीव रूप में देखा। भारतीय लोक कला मंडल में कठपुतली शो, तेरह-ताली, भवाई नृत्य ने अलग ही लोक-संसार का अनुभव दिया। सभी प्रतिभागियों ने दो-दो मूल्यांकन पत्रों में अपने अनुभव लिखे और एक-एक पाठ योजना भी तैयार की, जिसमें हस्तशिल्प का शिक्षण में समावेश अनिवार्य था।

रविवार को बाहर घूमने की अनुमति मिली। उदयपुर, जिसे झीलों की नगरी और पूर्व का वेनिस कहा जाता है, का सौंदर्य देखने का अवसर मिला। पिछोला और फतेहसागर झीलें, सिटी पैलेस, जगमंदिर जैसे ऐतिहासिक स्थल तथा माउंट आबू, नाथद्वारा, कुंभलगढ़, चित्तौड़गढ़, हल्दी घाटी जैसे स्थल प्रतिभागियों ने भ्रमण किए। यहाँ की हरियाली और प्राकृतिक सौंदर्य को शब्दों में बाँधना असंभव है। उन्हें केवल हृदय से ही महसूस किया जा सकता है।

कार्यशाला समाप्ति की वेला सबके लिए भावुक करने वाली थी। सभी प्रतिभागी मन ही मन यही सोच रहे थे-काश! यह कार्यशाला कुछ दिन और चलती। अंतिम कार्यक्रम को सिद्धि समारोह नाम दिया गया। प्रतिभागियों द्वारा तैयार की गई शिल्प कृतियाँ, प्रोजेक्ट आदि प्रदर्शित किए गए। प्रतिनिधि प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा किए। सभी ने श्री अभीक सरकार, श्री हितेश पानेरी, श्रीमती दिव्या, श्री पल्लव मालवीय, श्री गौरव आदि का सुंदर कार्यशाला आयोजन हेतु आभार प्रकट किया। सभी ने एक स्वर में कहा- हम इस हस्तकला कौशल को कक्षा-शिक्षण में अवश्य उपयोग करेंगे और अपने क्षेत्र के हस्तशिल्पियों को सम्मान व प्रोत्साहन देंगे।

पीजीटी संस्कृत
पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
चौटाला, सिरसा

विज्ञान व जनसंचार को नव-उत्कर्ष देने का 'इरादा'

डॉ. सुदेश रानी

इरादा (IRADA) यानी इंडियन रिसोर्स एंड डेवलपमेंट एसोसिएशन एक पंजीकृत स्वैच्छिक सामाजिक संस्था है, जो हरियाणा राज्य में विशेष रूप से कुरुक्षेत्र जिले को केंद्र बनाकर सामाजिक सुधार, शिक्षा, विज्ञान संचार, पर्यावरण जागरूकता और स्वास्थ्य संवर्धन के क्षेत्रों में कार्यरत है। इस संस्था की स्थापना का मुख्य उद्देश्य समाज के वंचित, ग्रामीण और अर्ध-शहरी समुदायों को वैज्ञानिक सोच, जागरूकता और संवाद के माध्यम से सशक्त बनाना है।

इरादा संस्था की कार्यप्रणाली जनसंपर्क, समुदाय की सहभागिता और नवाचार के सिद्धांतों पर आधारित है। संस्था का मानना है कि परिवर्तन की शुरुआत जमीनी स्तर से होती है, और इसी सोच के तहत इरादा ने विज्ञान आधारित गतिविधियों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए अनेक प्रयोगात्मक प्रयास किए हैं।

संस्था के उल्लेखनीय कार्यों को मान्यता देते हुए भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान संचार सम्मान से भी नवाजा जा चुका है। इसी क्रम में इरादा ने इरादा रेडियो (88.4 FM) नामक एक सामुदायिक रेडियो की स्थापना कर विज्ञान और जनसंचार के क्षेत्र में एक नई और क्रांतिकारी पहल की है। यह रेडियो स्टेशन विज्ञान, शिक्षा और सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित कार्यक्रमों के माध्यम से समुदाय में संवाद, शिक्षा और मनोरंजन का एक अभिनव मंच बनकर उभरा है।

हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिले में स्थित इरादा एनजीओ पिछले कई वर्षों से समाज के विभिन्न वर्गों के बीच शिक्षा, विज्ञान और जागरूकता को लेकर अथक कार्य कर रही है। संस्था के अध्यक्ष श्री राजपाल पांचाल के नेतृत्व में इरादा ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच एक सेतु का कार्य किया है, जो जानकारी और संवाद के अभाव को दूर करने में सहायक रहा है। विज्ञान, पर्यावरण, स्वास्थ्य, महिला सशक्तीकरण, कृषि, स्वच्छता और सतत विकास जैसे विषयों पर आधारित इसके कार्यक्रम समाज में व्यावहारिक बदलाव लाने में सफल रहे हैं।

विज्ञान संचार के लिए अभिनव प्रयोग

विज्ञान संचार के क्षेत्र में इरादा द्वारा कई रचनात्मक और प्रभावशाली गतिविधियाँ चलाई गई हैं। इनमें शामिल हैं- स्टेम (STEM) बाइक द्वारा गाँव-गाँव जाकर प्रयोगात्मक विज्ञान प्रदर्शन, ज्ञान मेले, विज्ञान प्रदर्शनियाँ, शैक्षणिक कार्यशालाएँ, सांस्कृतिक व संवाद सत्र, तथा डिजिटल एवं दृश्य-श्रव्य सामग्री के माध्यम से जागरूकता अभियान। इन कार्यक्रमों के माध्यम से विशेषकर छात्रों और शिक्षकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया है। अनेक स्कूलों, कॉलेजों और विज्ञान शिक्षकों ने इस अभियान में सक्रिय भूमिका निभाई है। इसके अतिरिक्त इरादा संस्था ने सोशल मीडिया, ऑडियो-विजुअल सामग्री, और स्थानीय भाषाओं में प्रचार सामग्री के ज़रिये आमजन तक वैज्ञानिक जानकारी पहुँचाने में भी सफलता पाई है।

कम्युनिटी रेडियोः 'इरादा रेडियो' की अनूठी पहल

जनसंचार और जनजागरूकता की दिशा में इरादा रेडियो (88.4 FM) संस्था की एक क्रांतिकारी और अभिनव पहल है। यह हरियाणा का एक प्रमुख सामुदायिक रेडियो स्टेशन है, जो स्थानीय मुद्दों, संस्कृति, भाषा और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए प्रसारण करता है। इस रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में शामिल हैं- विज्ञान एवं तकनीकी जानकारी, महिला सशक्तीकरण और स्वास्थ्य जागरूकता, कृषि और पर्यावरण संरक्षण पर आधारित वार्ताएँ, स्थानीय सफलता की कहानियाँ, और मनोरंजन व संगीत के माध्यम से शिक्षाप्रद कार्यक्रम।

उद्घाटन समारोह में शामिल हुए तत्कालीन राज्यपाल

विगत वर्ष हरियाणा के तत्कालीन राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने इरादा रेडियो का विधिवत् उद्घाटन किया। यह समारोह न केवल संस्था के लिए बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए गौरव का क्षण था। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने संस्था के कार्यों की सराहना करते हुए इसे विज्ञान और समाज के बीच सेतु का कार्य करने वाली अग्रणी संस्था बताया। कार्यक्रम में इरादा एनजीओ के सभी सहयोगियों, कार्यकर्ताओं और विज्ञान संचार के क्षेत्र में योगदान देने वाले व्यक्तियों को माननीय राज्यपाल द्वारा प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर माननीय बंडारू दत्तात्रेय ने अपने उद्बोधन में कहा- इरादा एनजीओ और इरादा रेडियो जैसी संस्थाएँ समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं। ये न केवल जनसंचार के सशक्त माध्यम हैं, बल्कि विज्ञान, शिक्षा और सामाजिक चेतना के संवाहक भी हैं। आज के डिजिटल युग में जब समाज को सटीक और वैज्ञानिक जानकारी की आवश्यकता है, ऐसे में इरादा जैसे संगठन अपनी जिम्मेदारी को अत्यंत निष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ निभा रहे हैं।

शिक्षकों को किया गया सम्मानित

इसी समारोह में सम्मानित किए गए अध्यापकों में शामिल थे- पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, दामला में कार्यरत विज्ञान शिक्षक श्री दर्शन लाल बवेजा। उन्हें विज्ञान संचार और शैक्षणिक गतिविधियों में इरादा एनजीओ के साथ रिसोर्स पर्सन के रूप में दीर्घकालिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया। गौरतलब है कि श्री बवेजा ने विद्यालयों और सामुदायिक स्तर पर अनेक विज्ञान कार्यशालाओं, प्रदर्शनों, विज्ञान रैलियों, तथा संवाद कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों और अभिभावकों में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाई है। 'शिक्षा सारथी' पत्रिका में उनका नियमित स्तंभ 'खेल-खेल में विज्ञान' विद्यार्थियों व अध्यापकों के बीच काफी लोकप्रिय है।

हिन्दी अध्यापिका
राजकीय उच्च विद्यालय, सैक्टर-25, पंचकूला

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना, अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- आपकी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

प्रश्न 1: भारत के पहले प्रधानमंत्री कौन थे ?
उत्तर: पंडित जवाहरलाल नेहरू

प्रश्न 2: भारत का राष्ट्रीय पक्षी कौन है?
उत्तर: मोर

प्रश्न 3: सूरज किस दिशा से उगता है ?
उत्तर: पूर्व दिशा से

प्रश्न 4: सबसे बड़ा महाद्वीप कौन सा है?
उत्तर: एशिया

प्रश्न 5: किस जानवर को रेगिस्तान का जहाज़ कहा जाता है ?
उत्तर: ऊँट को

प्रश्न 6: इंद्रधनुष में कितने रंग होते हैं ?
उत्तर: सात

प्रश्न 7: सबसे बड़ा समुद्र कौन सा है ?
उत्तर: प्रशांत महासागर (Pacific Ocean)

प्रश्न 8: कौन सा त्योहार दीपों का त्योहार कहलाता है?
उत्तर: दीपावली (दीवाली)

प्रश्न 9: बापू किस महान नेता को कहा जाता है?
उत्तर: महात्मा गांधी को

पहेली बूझो: प्राणी खोजो

1. भारत का राष्ट्रीय पशु
2. भारत का राष्ट्रीय पक्षी
3. भारत का राष्ट्रीय सरीसृप
4. भारत का राष्ट्रीय जलीय जीव
5. सबसे बड़ा अंडा देने वाला पक्षी
6. सबसे विशाल जीवित प्राणी
7. सबसे विशाल स्थलीय जीव
8. जिसका रास्ता काटना अपशकुन
9. बेवकूफी का प्रतीक पर मेहनती
10. वर्षा में सुन्दर नृत्य करने वाला
11. लंबी पूँछ और काले मुख वाला
12. दूध और पानी को अलग करने वाला
13. बिल्लियों की लड़ाई में मज़ा लेने वाला
14. विष्णु जी का वाहन
15. लक्ष्मी जी का वाहन

उत्तर- 1. बाघ, 2. मोर, 3.नागराज (किंग कोबरा), 4. डॉल्फिन, 5. शुतुरमुर्ग, 6.नीली व्हेल, 7. हाथी, 8. बिल्ली, 9. गधा, 10. मोर, 11.कपि (लंगूर), 12. हंस,13. बंदर, 14. चील, 15. उल्लू

संकलन-संयोजन :
प्रशान्त अग्रवाल
प्राथमिक विद्यालय डहिया
फतेहगंज पश्चिमी, जिला बरेली
उत्तर प्रदेश

बाल पहेलियाँ

1. आता मैं तो सब डर जाते,
देर करूँ तो जन घबराते।
संग हवा के उड़ता जाऊँ,
धरती की मैं प्यास बुझाऊँ।

2. बिना पैर के चलकर आती,
साथ मेघ के खुशियाँ लाती।
धरती पर बढ़ जाती हलचल,
तन-मन को करती मैं शीतल।

3. मैं बादल में छिपकर आती,
गर्जन करती, चमक दिखाती।
कहते हैं सब मुझको रानी,
चकाचौंध से भरी कहानी।

4. बादल, बारिश से है नाता,
रंग सात लेकर मैं आता।
आसमान में दूँ दिखलाई,
देख मुझे जग खुशियाँ छाई।

5. साथ मुझे जो लेकर चलता,
वही भीगने से है बचता।
बारिश आती, मैं खुल जाता,
शीघ्र बताओ, क्या कहलाता?

6. न टोपी, न हूँ मैं छाता,
बारिश से नित रहूँ बचाता।
तन को पूरा मैं हूँ ढकता,
पहन इसे कोई न डरता।

7. जल, ज़मीन में मैं हूँ रहता,
टर्र-टर्र, टर मैं ही कहता।
देख घटा मैं खुशी मनाता,
बोलो बच्चो, क्या कहलाता?

8. न इंजन, न कोई चप्पू,
मुझे चलाते पम्मी, पप्पू।
धार देखकर सब हर्षाते,
कागज लेकर मुझे बनाते।

उत्तर- 1. बादल, 2. बारिश, 3. बिजली, 4. इंद्रधनुष, 5. छतरी, 6. रेनकोट, 7. मेंढक, 8. कागज की नाव

कन्हैया साहू 'अमित'
शाप्रा विद्यालय लमती, वि. खं. भाटापारा
जिला- बलौदा बाज़ार, छत्तीसगढ़

कुम्हार और उसके दो घड़े

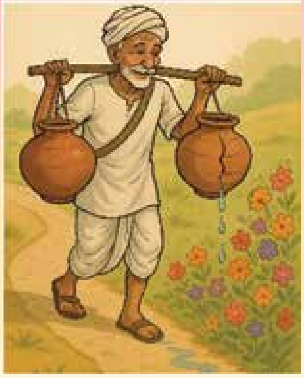

एक कुम्हार के पास दो बड़े घड़े थे, जिन्हें वह रोज़ अपने कंधे पर रखकर नदी से पानी लाता था। लेकिन उनमें से एक घड़ा थोड़ा फूटा हुआ था। जब भी वह पानी भरकर लाता, तो रास्ते में उस घड़े से थोड़ा-थोड़ा पानी टपकता रहता।

एक दिन फूटा हुआ घड़ा बोला- मालिक! मुझसे आप रोज़ कम पानी ला पाते हैं। मैं आधा खाली हो जाता हूँ। मुझे बदल क्यों नहीं देते?

कुम्हार मुस्कुराया और बोला कल मैं तुम्हें एक चीज दिखाऊँगा, फिर बताना कि तुम्हें बदलना चाहिए या नहीं।

अगले दिन जब वह पानी लाने गया, तो कुम्हार ने उस घड़े से कहा- तू उस रास्ते को देख, जिस ओर से पानी टपकता है।

घड़े ने देखा उस रास्ते के किनारे रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे, जबकि दूसरे घड़े के रास्ते में सब सूखा था।

कुम्हार ने कहा- जिस ओर तेरा पानी गिरता था, उस ओर मैंने फूलों के बीज बिखेर दिए थे। अब देख, वे कितने सुंदर खिल उठे हैं। तू अधूरा नहीं है, बस तेरा काम थोड़ा अलग है।

शिक्षा- हर किसी की अपनी ख़ासियत होती है। जो कमज़ोरी लगती है, वही किसी और के लिए वरदान बन सकती है।

जानिए पिनकोड के बारे में

पिनकोड का प्रयोग हम सभी पत्रों में करते हैं। क्या आपको पता है कि इसका पहला अंक देश के ज़ोन, दूसरा व तीसरा अंक सब-जोन, और अंतिम तीन अंक जिला, सॉर्टिंग ऑफिस आदि को दर्शाता हैं? आइए जानें कि पिनकोड का पहला अंक किस क्षेत्र (प्रदेश) को दर्शाता है:

अंक 1 : दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर।

अंक 2 : उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड।

अंक 3 : राजस्थान, गुजरात, दमन और दीव, दादरा एवं नगर हवेली।

अंक 4 : महाराष्ट्र, गोवा और मध्य प्रदेश।

अंक 5 : आंध्र प्रदेश और कर्नाटक।

अंक 6 : तमिलनाडु, केरल और लक्षद्वीप।

अंक 7 : पश्चिम बंगाल, अंडमान-निकोबार, ओडिशा, अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड और त्रिपुरा।

अंक 8 : बिहार और झारखंड।

अंक 9 : अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, सिक्किम और अन्य उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, साथ ही भारतीय सेना (APO/FPO)।

देखा आपने बच्चो! केवल पहले अंक से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि पत्र किस क्षेत्र से आया है।

विनय मोहन 'खारवन'
गणित प्राध्यापक
राकवमा विद्यालय, जगाधरी, हरियाणा

भाई-बहन का प्यार है राखी

सावन का त्योहार है राखी,
घर-घर की मुस्कान है राखी।
भाई-बहन के प्यार को,
दिल से खूब जोड़ती राखी।
दूर बसे जो भाई-बहन हैं,
उन्हें जोड़े रखती राखी।
भाई मेरा रहे स्वस्थ-सुखी,
भाव जगाती बहन की राखी।
जिसके होता नहीं है भाई,
बहन को सूनी लगती राखी।
सावन की रिमझिम बूँदों में,
गीत खुशी के गाती राखी।

दिनेश विजयवर्गीय
215, मार्ग-4, रजत कॉलोनी,
बूंदी -323001, राजस्थान

विज्ञान श्रृंखला

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व उत्साही विद्यार्थियो! खेल-खेल में विज्ञान श्रृंखला के अंतर्गत कुछ नई व रुचिकर विज्ञान गतिविधियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं-

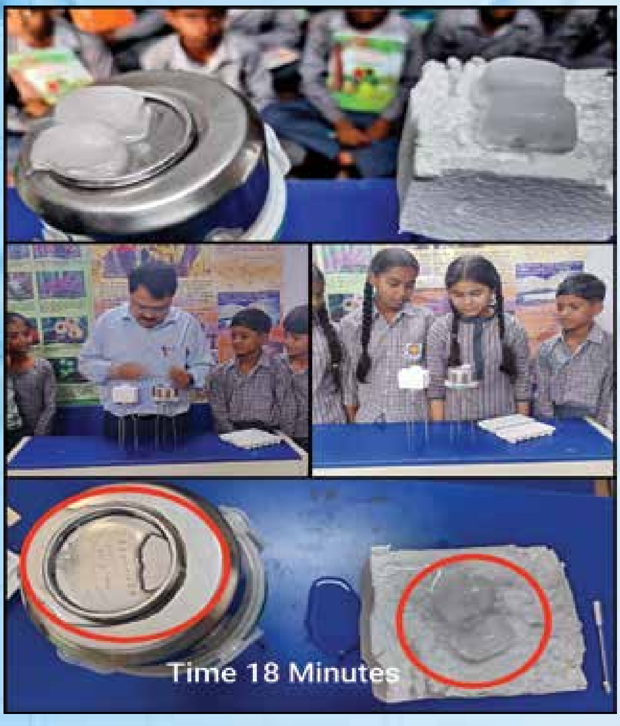

1. थर्माकोल का ऊष्मा-रोधक गुण पता लगाना

हमारे दैनिक जीवन में ऊष्मा के संचरण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कुछ वस्तुएँ ऊष्मा का अच्छे से संचरण करती हैं, जबकि कुछ वस्तुएँ ऊष्मा को रोकने का कार्य करती हैं। ऐसी वस्तुओं को ऊष्मा-रोधक कहा जाता है। विद्यार्थियों ने एक सरल प्रयोग द्वारा थर्माकोल का ऊष्मा-रोधक गुण पता लगाया। इस गतिविधि में हमने 5 घन सेंटीमीटर आकार का एक थर्माकोल का पीस, एक धातु बर्तन और दो-दो बराबर आकार के बर्फ के टुकड़े लिए। सबसे पहले थर्माकोल पीस और धातु की डिब्बी को मेज पर अलग-अलग ट्रायपॉड स्टैंड पर रखा गया। बर्फ के दो-दो टुकड़े उन पर रखे। इन्हें पिघलने के लिए कुछ समय तक कक्ष ताप पर छोड़ दिया गया। कुछ ही समय में यह देखा गया कि धातु पर रखे बर्फ के टुकड़े जल्दी पिघल गए, जबकि थर्माकोल पर बर्फ के टुकड़े देर से पिघले। इसका कारण यह है कि धातु ऊष्मा की सुचालक होती है और वह ऊष्मा को तेजी से बर्फ तक पहुँचाती है, जिससे बर्फ जल्दी पिघल जाती है। इसके विपरीत, थर्माकोल ऊष्मा का कुचालक होता है, जो ऊष्मा के संचार को रोकता है; इस कारण थर्माकोल पर रखा बर्फ का टुकड़ा देर से पिघलता है। विद्यार्थियों ने कहा- अच्छा! तभी तो थर्माकोल का उपयोग खाद्य पदार्थों, दवाइयों और अन्य वस्तुओं को ठंडा या गर्म बनाए रखने के लिए पैकिंग सामग्री के रूप में किया जाता है।

2. थर्माकोल और छड़ चुंबक से सरल दिशा-सूचक यंत्र बनाना

दिशा का पता लगाने के लिए पुराने समय में लोग प्राकृतिक संकेतों या सरल यंत्रों का उपयोग करते थे। आज भी हम एक बेहद सरल दिशा-सूचक यंत्र (कंपास) नज़दीकी उपलब्ध सामान्य वस्तुओं से बना सकते हैं। इस गतिविधि में मैंने अपने विज्ञान कक्ष में उपलब्ध साइंस किट से एक छोटा सा थर्माकोल का टुकड़ा और एक छड़ चुंबक का उपयोग किया, जो एन व एस अक्षरों द्वारा पूर्व ही चिह्नित थी। इसके बाद थर्माकोल के छोटे टुकड़े को लिया और छड़ चुंबक को उसके ऊपर संतुलित तरीके से रख दिया। फिर पानी से भरे एक चौड़े बर्तन में इस थर्माकोल और चुंबक को धीरे-धीरे सतह पर तैरने के लिए छोड़ दिया। कुछ ही क्षणों में यह देखा गया कि पानी में तैरता हुआ थर्माकोल और उस पर रखा छड़ चुंबक धीरे-धीरे घूमते हुए एक निश्चित दिशा में स्थिर हो गया। चुंबक का एक सिरा हमेशा पृथ्वी के चुंबकीय उत्तर की ओर और दूसरा दक्षिण की ओर संकेत करने लगा। इसका कारण यह है कि पृथ्वी स्वयं एक विशाल चुंबक के समान है और चुंबक का उत्तरी ध्रुव पृथ्वी के चुंबकीय दक्षिण की ओर आकर्षित होता है। इस सरल गतिविधि से यह सिद्ध हुआ कि थर्माकोल के तैरने का गुण और चुंबक की दिशा को स्वतः सेट करने की क्षमता मिलकर दिशा-सूचक यंत्र का कार्य कर सकती हैं। यह गतिविधि छात्रों को चुंबकीय बल, दिशा-ज्ञान और विज्ञान की व्यावहारिक समझ विकसित करने में मदद करती है।

3. केंचुआ खाद बनाने की पूरी प्रक्रिया सीखी

विद्यालय में स्थापित स्कूल इनोवेशन काउंसिल व इको क्लब सदस्यों की मदद से एक वर्मी कंपोस्ट पिट स्ट्रक्चर का निर्माण करवाया गया है। इसके अंतर्गत ईंटों का उपयोग कर एक चौकोर स्ट्रक्चर सहित यह पिट तैयार किया गया, जिसकी निचली सतह पर उचित जल निकासी के लिए जगह छोड़ी गई। पिट में केंचुए, पशुओं का गोबर, सूखी घास, पत्तियाँ तथा अन्य वनस्पति अवशेष डाले गए। नियमित रूप से इसमें पानी

डालकर नमी बनाए रखी जाती है, जिससे केंचुए जैविक कचरे को विघटित कर उत्तम गुणवत्ता वाली जैविक खाद (वर्मी कंपोस्ट) तैयार कर सकें। विद्यार्थियों ने देखा कि इस वर्मीकंपोस्ट पिट स्ट्रक्चर में स्थानीय उपलब्ध सामग्री जैसे ईंट, रेत, सीमेंट, सूखी घास और गोबर का उपयोग कर पर्यावरण-अनुकूल तकनीक को अपनाया गया है। इस गतिविधि ने न केवल विद्यार्थियों में वैज्ञानिक/पर्यावरण हितैषी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया, बल्कि जैविक खेती और अपशिष्ट प्रबंधन के प्रति जागरूकता भी उत्पन्न की है।

4. खाद्य पदार्थों में प्रोटीन की जाँच करनी सीखी

इस विज्ञान गतिविधि में विद्यार्थियों ने खाद्य पदार्थों में प्रोटीन की उपस्थिति की जाँच की। इसके लिए उन्होंने कॉपर सल्फेट विलयन, कास्टिक सोडा, चने का पाउडर और चावल का आटा प्रयोग किया। सबसे पहले दो टेस्ट ट्यूब लिए गए, जिनमें एक में चने के पाउडर का घोल और दूसरी में चावल के आटे का घोल बनाया गया। फिर दोनों में कुछ बूँदें कॉपर सल्फेट विलयन की डाली गईं और उसके बाद कास्टिक सोडे की कुछ बूँदें मिलाई गईं। कुछ समय बाद देखा गया कि जिस टेस्ट ट्यूब में चने का पाउडर था, उसमें नीला-बैंगनी रंग दिखाई दिया, जो प्रोटीन की उपस्थिति का संकेत है; जबकि चावल के आटे में कोई विशेष रंग परिवर्तन नहीं हुआ। इससे यह सिद्ध हुआ कि चने में प्रोटीन उपस्थित है, जबकि चावल में नहीं। विद्यार्थियों ने इस गतिविधि को अपने हाथों से करके देखा, जिससे उन्हें विज्ञान की व्यावहारिक समझ प्राप्त हुई। इसे अपने हाथों से करके उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई। इस गतिविधि से उनमें प्रयोगात्मक कौशल, अवलोकन शक्ति, निष्कर्ष निकालने की क्षमता तथा समूह में कार्य करने का अनुभव भी विकसित हुआ।

यह गतिविधि विद्यार्थियों के लिए रोचक और सीखने योग्य अनुभव रही।

5. कारपेट कुतरता चूहा : विज्ञान कक्ष की अनोखी घटना

विद्यालय जीवन में आए दिन ऐसी अनेक घटनाएँ घटित होती हैं, जो बच्चों की जिज्ञासा को जन्म देती हैं और उन्हें समस्या-समाधान व नवाचार की दिशा में प्रेरित करती हैं। ऐसी ही एक रोचक घटना हाल ही में हमारे विद्यालय के विज्ञान कक्ष में घटित हुई। विद्यालय अवकाश के उपरांत विज्ञान कक्ष में कारपेट के कई हिस्से कुतरे हुए पाए गए। जाँच करने पर पता चला कि कोई (एक या अधिक) चूहा प्रतिदिन कारपेट को कुतर जाता है। यह देखकर विद्यार्थी अत्यंत उत्सुक हुए कि आखिर चूहा ऐसा क्यों करता है ? मेरे हिंट देने पर विद्यार्थियों ने अध्ययन किया तो पाया कि चूहे के दाँत जीवन-भर बढ़ते रहते हैं। अपनी दाँतों की लंबाई नियंत्रित करने और घिसने के लिए चूहे लकड़ी, कपड़ा, कारपेट जैसी चीजों को कुतरते हैं -जो कि उनकी मजबूरी है। यहाँ कारपेट में प्रयुक्त ऊन, नरमी व उसकी गंध भी चूहों को आकर्षित करती होगी। अपने दाँतों की मरम्मत करने के चक्कर में उन्होंने विज्ञान कक्षा का कारपेट कुतर दिया। इससे बचाव के लिए उन्होंने कुछ उपाय भी अभिभावकों से पूछे व अन्यत्र पढ़े- जैसे कारपेट के कोनों को लोहे की जाली से ढँकना, विज्ञान कक्ष में नैप्थलीन की गोलियाँ व कपूर रखना, कारपेट के पास पुदीने के तेल का प्रयोग करना। एक अल्ट्रासोनिक ध्वनि यंत्र बनाना, जो चूहों को बिना हानि पहुँचाए दूर रख सके। हाल-फिलहाल उन्होंने फिनायल विलयन स्प्रे कर दिया। विद्यार्थियों ने मिलकर एक इको-फ्रेंडली चूहा भगाने वाला यंत्र बनाने का प्रस्ताव भी रखा, जिसमें अल्ट्रासोनिक तरंगें उत्पन्न कर विज्ञान कक्ष के सामान को सुरक्षित रखा जा सकेगा। यह न केवल पर्यावरण के अनुकूल होगा, बल्कि रासायनिक उत्पादों की आवश्यकता भी समाप्त कर देगा। इस रोचक घटना ने विद्यार्थियों में जिज्ञासा, समस्या-समाधान, वैज्ञानिक विश्लेषण तथा नवाचार की भावना को प्रोत्साहित किया। ऐसी घटनाएँ विद्यार्थियों को केवल पढ़ाई तक सीमित न रखकर व्यावहारिक विज्ञान की ओर भी प्रेरित करती हैं।

अच्छा, तो आदरणीय अध्यापक साथियो व प्रिय विद्यार्थियो, आगामी अंक में फिर से मिलते हैं नई विज्ञान गतिविधियों के साथ। आशा है, आप उनको भी पसंद करेंगे व करके देखेंगे।

साइंस मास्टर/ईएसएचएम
पीएमश्री रावमा विद्यालय, दामला
खंड जगाधरी, यमुनानगर

विज्ञान शृंखला

मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला

डॉ. मोनिका शर्मा

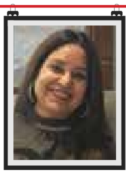

प्यारे बच्चो, विज्ञान सिर्फ़ स्कूल की किताबों में ही नहीं होता, वह हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भी छुपा होता है-खासकर मम्मी की रसोई में! ज़रा ध्यान दो, मसाले, दालें, सब्ज़ियाँ, अचार-हर एक चीज़ में विज्ञान छुपा है। तो चलो बच्चो, इस बार की 'मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला' की कड़ी में बात करते हैं उस चीज़ की जो हर खाने का स्वाद बदल देती है- नमक! हाँ, वही नमक जो बिना दिखाई दिए हर व्यंजन में घुल जाता है और खाने को बना देता है मजेदार। तभी तो कहते हैं- बिना नमक के खाना हमेशा फीका लगता है।

पर क्या तुम जानते हो कि नमक सिर्फ स्वाद नहीं बढ़ाता, वह विज्ञान का भी सुपरस्टार है ? ज़रा सोचो, जब नमक न हो तो खाना बे स्वाद क्यों लगता है? अचार महीनों खराब क्यों नहीं होता? नमक ज्यादा हो जाए तो खाना क्यों बिगड़ जाता है और मम्मी नमक को बोतल में बंद करके क्यों रखती हैं? इन सवालों के जवाब भी विज्ञान में छुपे हैं।

नमक का रासायनिक नाम है सोडियम क्लोराइड (NaCl)। यह दो तत्वों से मिलकर बना होता है- सोडियम, जो शरीर में तरल पदार्थों का संतुलन बनाए रखता है, और क्लोरीन, जो पाचन तंत्र को मज़बूती देता है। नमक का स्वाद भी विज्ञान से जुड़ा है। वह मिठास, खट्टेपन और कड़वाहट को संतुलित करता है। टमाटर, नींबू, इमली जैसी चीज़ों में थोड़ा नमक डाल दो, तो स्वाद और भी बढ़ जाता है। जब नमक हमारी ज़ुबान पर आता है, तो वह स्वाद कलिकाओं को सक्रिय कर देता है और हमें स्वाद का पूरा अनुभव मिलता है।

अब बात करते हैं अचार और नमक की दोस्ती की। अचार लंबे समय तक खराब नहीं होता, क्योंकि नमक उसमें बैक्टीरिया और फंगस को पनपने नहीं देता। यह भोजन में से पानी खींच लेता है, जिससे सूक्ष्म-जीव मर जाते हैं या बढ़ नहीं पाते। इस प्रक्रिया को 'परासरण' (Osmosis) कहा जाता है। बिना पानी के बैक्टीरिया जीवित नहीं रह सकते। इसलिए आम का अचार महीनों चलता है, नींबू का मुरब्बा सालों नहीं खराब होता।

पर नमक सिर्फ स्वाद और संरक्षण तक ही सीमित नहीं है। यह हमारे शरीर के संतुलन के लिए भी ज़रूरी है। अगर शरीर में नमक की मात्रा कम हो जाए, तो चक्कर आ सकते हैं, थकावट महसूस होती है और माँसपेशियाँ अकड़ सकती हैं। वहीं अगर ज्यादा हो जाए, तो ब्लड प्रेशर बढ़ सकता है। इसलिए डॉक्टर और मम्मी हमेशा कहते हैं- नमक न ज्यादा, न कम-बस सही मात्रा में!

क्या तुमने कभी सोचा है कि नमक से बिजली भी चल सकती है? जब नमक पानी में घुलता है, तो वह चार्ज वाले कण यानी आयन बनाता है। यही आयन बिजली के संचार में मदद करते हैं। इसी सिद्धांत पर इलेक्ट्रोलाइट बैटरियाँ काम करती हैं। जैसे कि हमारे मोबाइल और लैपटॉप में लगी लिथियम-आयन बैटरियाँ। यहाँ तक कि नमक-पानी से चलने वाली इमरजेंसी लाइट्स और लैम्प्स भी होते हैं जो विशेष रूप से समुद्री या ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोगी हैं। फ्यूल सेल्स में भी हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को मिलाकर बिजली बनाई जाती है, जिसमें आयनों की भूमिका अहम होती है। वॉटर प्यूरीफ़ायर में भी नमक आधारित आयन एक्सचेंज तकनीक का प्रयोग पानी की कठोरता कम करने और हानिकारक धातुओं को हटाने में होता है।

अब ज़रा आइसक्रीम की बात करें। क्या आप जानते हैं कि आप बिना फ्रीज़र के घर पर आइसक्रीम बना सकते हैं- वो भी सिर्फ बर्फ और नमक से? जब बर्फ में नमक मिलाते हैं, तो बर्फ और भी ठंडी हो जाती है। इतनी ठंडी कि दूध और मलाई को जमाकर स्वादिष्ट आइसक्रीम बना देती है। इस प्रक्रिया को कहते हैं 'फ्रीज़िंग पॉइंट डिप्रेशन'।

और हाँ, मम्मी नमक को बोतल में बंद करके क्यों रखती हैं, इसका भी कारण है-नमक का हाइग्रोस्कोपिक स्वभाव। इसका मतलब है कि नमक हवा से नमी खींच लेता है और खुद नम हो जाता है। इसलिए उसे सीलबंद डिब्बों में रखा जाता है।

तो देखा बच्चो, जो नमक हमें बस स्वाद के लिए लगता था, उसमें कितना सारा विज्ञान छुपा है! यह न सिर्फ़ खाने को स्वादिष्ट बनाता है, बल्कि उसे सुरक्षित रखता है, बिजली बनाने में मदद करता है, और आइसक्रीम तक जमाता है। नमक छोटा ज़रूर है, पर इसकी ताकत बड़ी है।

अब अगली बार जब मम्मी खाना बनाए और नमक डाले, तो ध्यान से देखना-उस में सिर्फ स्वाद नहीं होगा, विज्ञान भी होगा। मिलते हैं अगली बार 'मम्मी की रसोई' की नई कहानी में- एक और स्वाद, एक और विज्ञान के साथ। तब तक खाते रहो, सीखते रहो।

बीआरपी (साइंस)
मोरनी हिल्स, पंचकूला, हरियाणा

संस्कृत और संस्कृतिः भारत की दो अमूल्य निधियाँ

संस्कृत शब्द का अर्थ होता है - परिष्कृत, पूर्ण एवं अलंकृत। संस्कृत दिवस हर वर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। भारत-सरकार के शिक्षा-मंत्रालय के आदेश से केंद्रीय तथा राज्य स्तर पर संस्कृत दिवस मनाने का निर्देश सन 1969 में जारी किया गया था। तभी से संपूर्ण भारत में संस्कृत दिवस को श्रावण मास की पूर्णिमा को रक्षाबंधन के दिन मनाया जाता है। इसके लिए श्रावण पूर्णिमा का दिन चुनने का कारण हमारे प्राचीन भारत में इस दिन शिक्षण शुरू करने तथा वेद पाठ का शुभारंभ होता था और विद्यार्थी भी इसी दिन से शास्त्रों के अध्ययन का प्रारंभ किया करते थे। इस वर्ष संस्कृत दिवस 9 अगस्त, 2025 को मनाया गया। संस्कृत दिवस और रक्षाबंधन का त्यौहार एक साथ मनाया जाता है।

भारत में संस्कृत भाषा आदि काल से चली आ रही है। संस्कृत भाषा सब भाषाओं की जननी है। संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है। संस्कृत को देव वाणी अर्थात् देवताओं की भाषा भी कहा जाता है। वैदिक ऋचा, संस्कृत श्लोक सुनने से मन अंतर्मुख होता है, शांति और माधुर्य पाता है, क्योंकि संस्कृत भाषा अंतरात्मा से निकली है, यह मनगढ़ंत नहीं है।

संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की आधारशिला है। संस्कृत के विषय में किसी ने कहा है- "भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृति स्तथा" अर्थात् भारत की दो प्रतिष्ठाएँ हैं- संस्कृत और संस्कृति। हमारी संस्कृति की धरोहर संस्कृत भाषा में संरक्षित है। संस्कृत ने हमारे विशाल देश की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोया है। अनेक भारतीय भाषाएँ संस्कृत के शब्द कोश से मजबूत हुई हैं और वे विभिन्न क्षेत्रों एवं राज्यों में फल-फूल रही हैं। संस्कृत भाषा गणित, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, चिकित्सा शास्त्र, वास्तु-शास्त्र, ज्योतिष-शास्त्र, रसायन-विज्ञान आदि क्षेत्रों में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना रही है। विभिन्न वैज्ञानिक शोधों से यह बात सिद्ध हुई है कि संस्कृत के श्लोकों व मंत्रों के उच्चारण से एकाग्रता, बुद्धि व स्मृति का अद्भुत विकास होता है। अध्ययनों के अनुसार मंत्र व श्लोक उच्चारण से श्वसन-तंत्र की कार्य-प्रणाली में सुधार, नियंत्रित रक्तचाप, रक्त का ठीक से संचरण, तनाव में राहत, गहरी नींद आना आदि स्वास्थ्य लाभ भी होते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि संस्कृत भाषा में केवल धार्मिक साहित्य ही है। यह विचार ठीक नहीं है। संस्कृत ग्रंथों में वेद, उपनिषद्, नीतिशास्त्रों, गीता, भागवत, महाभारत, स्मृति, पुराणों आदि सद्ग्रंथों में समाया आध्यात्मिक ज्ञान है, जो मानवमात्र को अपने वास्तविक लक्ष्य परमात्मा-प्राप्ति की ओर अग्रसर करता है। मैकाले शिक्षा पद्धति से प्रभावित जो लोग पहले संस्कृत को केवल कर्मकांड की भाषा मानते थे तथा इसे अवैज्ञानिक व अनुपयोगी बताते थे, अब वैज्ञानिक शोधों से उनकी आँखें भी खुलने लगी हैं। कम्प्यूटर के लिए सबसे उत्तम भाषा संस्कृत है। संस्कृत साहित्य में विद्यमान सूक्तियाँ आत्मिक उन्नति के लिए प्रेरित करती हैं। जैसे- सत्यमेव जयते -सत्य की ही जीत होती है, वसुधैव कुटुम्बकम् -सारी धरती ही एक परिवार है, विद्ययाऽमृतमश्नुते- विद्या से अमरता प्राप्त होती है, योगः कर्मसु कौशलम् -कर्म में कुशलता प्राप्त करना ही योग है, इत्यादि।

संस्कृत भाषा तो अमृत स्वरूप है। यह रसभरी है। इसके वचन सरल हैं। यह सभी भाषाओं में महान तथा ज्ञान-विज्ञान को बढ़ाने वाली है। हमारा देश पहले सोने की चिड़िया कहलाता था। केवल संस्कृत और संस्कृति के कारण यदि हमें देश को फिर से सोने की चिड़िया बनाना है तथा भारत को विश्व गुरु बनाना है तो संस्कृत व संस्कृति को अपनाना होगा। सुसंस्कारी, प्रतिभाशाली व स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए देश-विदेश के सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में संस्कृत अनिवार्य रूप से पढ़ायी जानी चाहिए तथा पढ़नी चाहिए। इससे मनुष्य और समाज का सुधार हो जाएगा।

विक्रम सिंह
संस्कृत अध्यापक
शहीद दशरथ राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पीथड़ावास
रेवाड़ी, हरियाणा

2025

अगस्त माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

- 3 अगस्त- मैत्री दिवस
- 9 अगस्त-रक्षाबंधन
- 12 अगस्त-अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस
- 13 अगस्त-अंतरराष्ट्रीय वाम हाथ दिवस
- 14 अगस्त- विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस
- 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस
- 16 अगस्त- जन्माष्टमी
- 19 अगस्त - विश्व मानवतावादी दिवस
- 23 अगस्त- चंद्रयान-3 दिवस
- 26 अगस्त-श्री गुरु जम्भेश्वर जी जयंती
- 27 अगस्त- गणेश चतुर्थी
- 29 अगस्त- राष्ट्रीय खेल दिवस
- 30 अगस्त- भगवती चरण वर्मा जयंती

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Fragrance & Focus: How Aromas Boost Memory and Learning

Dr. Himanshu Garg

Have you ever walked into a room and suddenly felt your mind calm down? Or got the aroma of a flower that took you straight back to a childhood memory? That's not coincidence—it's the power of fragrance, working quietly but deeply in the background of our brains.

While we usually associate fragrance with beauty, luxury, or personal grooming, very few of us think of it as a learning tool. Yet, science says it can be exactly that. In fact, scent has a more direct path to our brain than sight or sound. This connection opens the door to exciting, research-backed possibilities, especially in education.

Today's students live in a world of distractions like screen fatigue, performance anxiety, information overload. Teachers, too, face increasing pressure to maintain student attention and engagement. In such a high-stress learning environment, fragrance might seem like a small factor. But what if this "small factor" could enhance concentration, reduce stress, and even improve memory retention?

Let's explore how.

The Science Behind the Aroma

Unlike our other senses, smell bypasses the brain's usual filters and travels directly to the limbic system i.e. the emotional and memory center of the brain. This is why a smell can trigger emotions or recall an old memory within seconds. This same mechanism can be tapped to help improve focus and cognitive function.

Studies in neuroscience and psychology have repeatedly demonstrated the link between scent and mental performance. For instance, research from the International Journal of Neuroscience in 2003 found that peppermint scent increased alertness and improved memory recall in test subjects. Another landmark study by Northumbria University (UK) showed that rosemary scent enhanced memory retention by up to 7% in students.

These findings suggest something simple yet powerful: fragrance can act as a memory anchor.

How It Works in Practice

Think of this in two parts: emotional regulation and memory support.

- **Emotional Balance:** Aromas like lavender, sandalwood, and chamomile have calming effects on the nervous system. They can reduce cortisol (stress hormone) levels, helping both students and teachers feel emotionally grounded. A calm mind learns and teaches better.
- **Memory Boost:** Aromas like rosemary, lemon, peppermint, and eucalyptus have been shown to increase alertness, improve mood, and enhance focus. They can act as mild cognitive stimulants and help

the brain stay awake and absorb better.

The brain can also create associations between scents and specific learning material. For example, if a student regularly studies with a rosemary diffuser on, and later smells rosemary before an exam, the scent may help trigger the same mental state and content recall.

Classroom and Home Applications

You don't need to build a fragrance lab to use this concept. Here are simple, practical ideas:

- **Study Corners at Home:** Use a diffuser or roll-on oil with rosemary or peppermint during focused study time.
- **Before Exams:** Inhale calming oils like lavender to manage pre-exam anxiety, or energizing scents like eucalyptus for alertness.
- **Classroom Ambience:** A consistent, mild fragrance in a classroom can help establish a learning environment. Essential oil diffusers with timer settings are an easy and safe option.

Teachers can also benefit. Those dealing with high workloads and burnout often experience stress-related fatigue. Fragrance like sandalwood or bergamot can act as natural mood balancers during teaching hours or personal downtime.

Fragrance in Educational Spaces: Global Examples

Globally, some schools have already begun experimenting with scent in learning. A few Japanese classrooms use diffused lemon oil to improve alertness. In Germany, research-based fragrance interventions have been studied to reduce exam anxiety. These aren't luxury experiments—they're functional, affordable strategies that create a subtle yet powerful support system for students and educators alike.

Important Considerations

- **Natural over Synthetic:** Focus on natural, safe essential oils—not synthetic air fresheners or harsh chemical scents.
- **Sensitivity Matters:** Some people are allergic or sensitive to smells. Always test in small spaces and avoid strong doses.
- **Routine Consistency:** The power of scent works best when tied to routine. Repeated exposure helps build scent–memory links.

Conclusion: A Breath of Success

Fragrance may be invisible, but its power in learning is undeniable. From reducing anxiety to improving memory, it offers a quiet, comforting presence that supports both the mind and the mood.

In a time where education is becoming increasingly digital and fast-paced, adding something as organic and ancient as scent can create balance. It reconnects us with our senses, with nature, and with ourselves.

So the next time you sit down to study, teach, or revise, don't just think about the syllabus, think about the atmosphere. Sometimes, all it takes to turn a distracted mind into a focused one is… one deep breath of the right aroma.

Assistant Professor
Dept. of Computer Science
Govt. College for Women Jind

The Future of Multilingualism in India: Trends, Challenges, and Opportunities

Narsingh Chahar

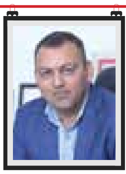

India stands as a shining example of linguistic richness, celebrated across the world for its incredible diversity. With 22 languages enshrined in the Constitution and hundreds more spoken in its villages, towns, and cities, India's languages are far more than tools of communication—they are living expressions of our culture, heritage, identity, and social harmony. They carry our stories, wisdom, and dreams across generations.

As our nation strides confidently into the 21st century, embracing rapid advances in education, technology, and the global economy, the importance of safeguarding and nurturing this multilingual legacy has never been greater. Multilingualism is not just a matter of pride; it is a vital force for inclusion, innovation, and national unity. The road ahead offers exciting opportunities to transform education and empower communities—but also presents real challenges we must address with urgency and care.

This article invites you to explore India's multilingual future: to discover the promising trends reshaping our classrooms and communities, to confront the obstacles that demand our collective action, and to unlock the vast opportunities waiting to be realised. Let us journey together into a vision of India where every language is valued, every learner is empowered, and our shared diversity becomes our greatest strength.

Understanding Multilingualism in India

Multilingualism means the ability to use and understand multiple languages. In India, multilingualism is a natural part of life. Many children grow up speaking their mother tongue at home, another regional language in their community, Hindi as a link language, and English as a medium of wider communication.

This multilingual heritage has always been India's strength. It allows people from different states and backgrounds to communicate, learn from one another, and maintain a shared national identity while celebrating local cultures.

Trends Shaping the Future of Multilingualism

1. Policy Support through NEP 2020

One of the most important trends is the renewed policy emphasis on multilingual education. The National Education Policy (NEP) 2020 has proposed the three-language formula,

encouraging students to learn their regional or mother tongue, Hindi, and English. This aims to ensure inclusivity while promoting national integration.

NEP 2020 also places importance on teaching in the mother tongue or regional language at least until Grade 5, and preferably until Grade 8. Research shows that children learn concepts better in their home language. This move is expected to improve learning outcomes, reduce dropout rates, and help bridge social divides.

2. Technological Innovations

Technology is playing a big role in supporting multilingualism. Today, there are many apps and digital platforms that help children learn languages through interactive games, videos, and stories. Virtual classrooms and e-learning resources are being designed in multiple languages to reach students in remote areas.

AI-powered translation tools and speech recognition technology are also making it easier for people to communicate across language barriers. Digital archives and libraries are preserving ancient texts and folk tales in regional languages for future generations.

3. Growing Academic and Community Interest

There is also a growing awareness of the need to preserve India's linguistic diversity. Universities, NGOs, and local communities are working to document and revitalise endangered languages. Tribal languages and oral traditions, many of which are at risk of disappearing, are being recorded and taught to new generations.

This work not only preserves cultural heritage but also empowers marginalised communities by recognising the value of their languages.

4. Changing Social Attitudes

Younger generations are showing an interest in reconnecting with their roots. Urban families are increasingly recognising the value of teaching children their mother tongue alongside English. For example, famous Indian cricketer Virender Sehwag once shared in an interview that he deliberately speaks Haryanvi at home with his wife and children to ensure they stay connected to their mother tongue and culture. Media and entertainment industries are also producing more multilingual content—from films and TV shows to social media posts—reflecting India's diverse linguistic reality.

Challenges Facing Multilingualism

Despite these positive trends, several challenges need attention:

1. Unequal Access and Implementation

While the NEP 2020 promotes multilingual education, implementing it effectively across India is complex. States have different linguistic contexts and resources. Some schools struggle to find qualified teachers fluent in multiple languages, especially in rural and tribal regions.

2. Language Hierarchies and Prestige

English is often seen as a gateway to better economic and social opportunities. Many parents prioritise English-medium education, sometimes at the cost of their child's proficiency in their mother tongue. This can create a hierarchy where regional languages are undervalued, threatening linguistic diversity.

3. Curriculum and Teaching Resources

Developing high-quality textbooks, learning materials, and assessments in multiple languages is a massive task. There is often a lack of standardised resources for many languages, especially tribal and minority languages. Teachers need training in multilingual pedagogy to teach effectively in diverse

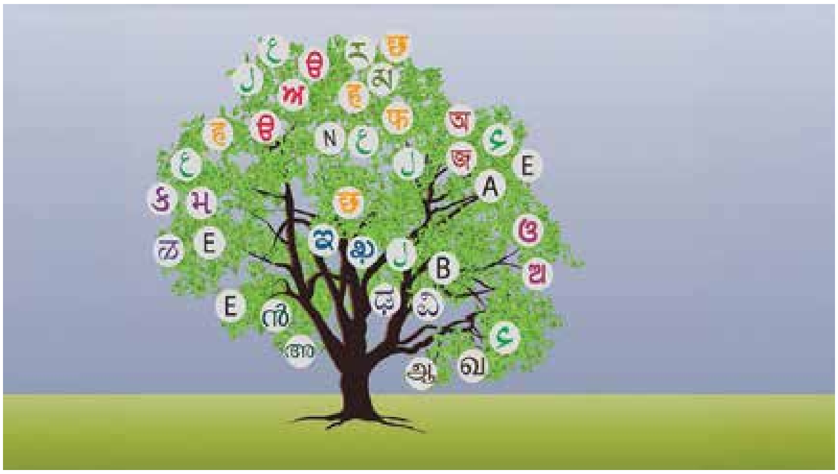

classrooms.

4. Risk of Language Loss

Many smaller languages and dialects are at risk of extinction. As people migrate to cities or adopt dominant languages, they may stop using their mother tongue. Losing a language also means losing cultural knowledge, oral history, and unique ways of thinking.

5. Administrative and Policy Challenges

India's federal system allows states to shape their own language policies, which is good for local needs but can create uneven implementation nationwide. Balancing local autonomy with national goals for multilingual education is a delicate task.

Opportunities for India

Despite these challenges, the opportunities presented by multilingualism are immense:

1. Better Learning Outcomes

Studies show that children who learn in their mother tongue understand concepts more deeply and develop better literacy skills. Using familiar languages in early education can reduce dropout rates and bridge achievement gaps for disadvantaged communities.

2. Cognitive and Social Advantages

Multilingual children tend to develop greater cognitive flexibility. They can switch between different ways of thinking, solve problems creatively, and understand other perspectives. These skills are valuable for life in an increasingly interconnected world.

3. Economic Benefits

Multilingualism enhances employability. India's diverse economy includes tourism, hospitality, translation services, media, international trade, and diplomacy—all sectors that value language skills. As India's global role grows, professionals fluent in multiple languages will be in high demand.

4. Cultural Preservation and Social Cohesion

Promoting multilingualism helps preserve India's cultural richness. It fosters respect for all communities and strengthens social bonds by reducing linguistic discrimination. When people learn one another's languages, they develop empathy and a sense of shared identity.

5. Global Leadership

India has the potential to be a model for multilingual education worldwide. By showcasing policies and practices that respect linguistic diversity while ensuring quality education for all, India can contribute to international discussions on inclusive and equitable learning.

Moving Forward: What Can Be Done?

For India to truly harness the power of multilingualism, several steps are crucial:

» **Teacher Training:** Invest in preparing teachers to handle multilingual classrooms and use innovative methods.

» **Resource Development:** Create high-quality textbooks, digital content, and assessments in multiple languages.

» **Community Involvement:** Engage parents and local communities in language preservation and learning.

» **Research and Documentation:** Continue documenting endangered languages and developing language databases.

» **Policy Coordination:** Ensure effective implementation of the NEP's multilingual goals across states.

» **Public Awareness:** Promote the value of all languages and challenge harmful hierarchies that prioritise one language over others.

Towards a Multilingual Future

The future of multilingualism in India is full of promise. By embracing its linguistic diversity, India can build an education system that is inclusive, equitable, and culturally vibrant. The challenges are real, but they can be overcome through thoughtful policy, innovative use of technology, and strong community partnerships.

A multilingual India is not just about language—it is about recognising the dignity and identity of every citizen. It is about preparing children for a future where they can communicate, collaborate, and create in a diverse and connected world. Investing in multilingualism today is investing in a stronger, more united, and more prosperous India tomorrow.

CBSE Resource Person & Educator
PGT in English
PMSHRI GGSSS Behal
Bhiwani, Haryana.

Learning with the Heart: Why Social Emotional and Ethical Learning Matters in Indian Classrooms

Image Source: https://www.vikasconcept.com/how-to-incorporate-social-emotional-learning-in-classrooms/

Dr. Feroz Khan

A classroom is much more than just a place where academic learning happens. It is where children learn to understand relationship, express emotions, and respond to challenges. Yet the entire focus remains on reading, writing and assessing their performances which remains central to our education system, life skills like emotional, and ethical learning are often overlooked. This results in behavioural issues like stress, depression, bullying and other psychological issues among children.

In recent years, India has witnessed a disturbing rise in incidents reflecting emotional distress not only among children but also in adults. A recent incident attracted the attention of many,in which a man beat his 17 years old daughter to death for scoring low marks in NEET mock test. Such vicious and brutal cases engage children in violent clashes, and tragic suicides, and is somewhere down the line linked to distress, bulling and academic pressure. These events are not isolated misdeeds, rather they show the growing emotional and ethical imbalance among the people and young learners. Such events cannot be addressed through academic reforms alone and their intensity may continue to rise.

This is where Social, Emotional, and Ethical Learning (SEEL) becomes not only just relevant but urgent. SEEL is not a new concept, rather it is built into in daily activities. Like – it helps children to channelise their feelings and emotions in the right direction. It also supports developing in them a healthy sense of self-identity as children learn to manage their emotions and make thoughtful, informed, and rational

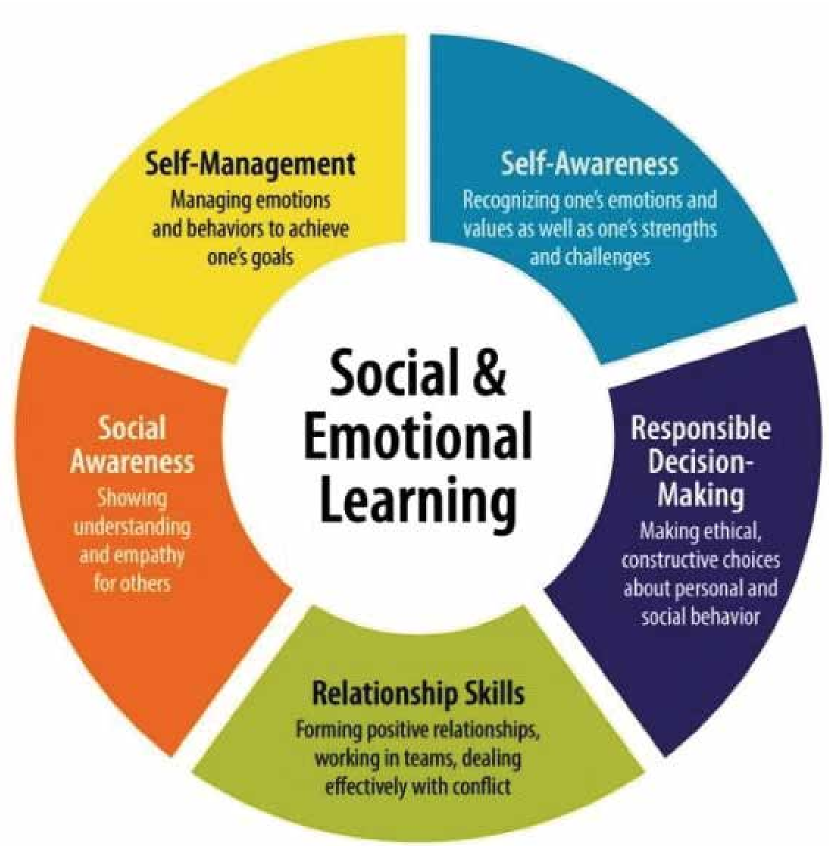

Image Source: https://www.stonehill.in/enrichment/social-emotional-learning

decisions. A lot of effort has been put in by policy makers, and its implementers i.e. teachers to create a conducive and inclusive environment in the classrooms to enable students to develop such abilities. However, we still have a long way to go as the school education system appears to revolve around rigid examination and assessment systems leaving teachers to prepare students for tests, help them handle exam pressure, and meet assessment goals, having little opportunity for children's social, emotional development.

What is Social Emotional and Ethical Learning (SEEL)?

In simpler terms – the concept of SEEL refers to a learning process of acquiring the knowledge and skills to understandand manage emotions. It helps individuals to set and achieve positive goals and make responsible decisions. It is not a process that can be learned in a single go. In fact, it is a life-long journey and a continuous learning process. Overtime it helps individual to become more empathetic, interact with others respectfully, and build a positive relationship. Ultimately, it is a process that supports the development of an individual to become emotionally intelligent, socially aware, and responsible.

Why SEEL Matters in India

In a diverse country like India, where children come from different cultural, linguistic, and religious backgrounds, it is important to create a classroom environment where every child feels safe, secure and respected. The Rights of every child should be valued and protected in the classroom.

Moreover, research shows that student stress and mental health issues in India are increasing. According to the National Crime Record Bureau (NCRB), over 13000 students in India died by suicide in 2023, with more than 2000 linked to academic failure. This alarming data highlights the importance of supporting children not only academically but also emotionally.

This is where SEEL plays a vital role. SEEL on the one hand helps create an inclusive, and safe space where children are seen, heard and valued and on the other it helps in resolving the conflicts peacefully and developing a sense of belongingness. Research also shows that SEEL helps children to perform better in academics and also demonstrates improved behaviour and emotional resilience.

Core Competencies of SEEL

Implementation of SEEL in the classroom is not a difficult task. There are multiple ways to implement it. Nonetheless, for children, storytelling and play could be one of the options. Through storytelling and play a child may not only learn to explore but also practice important life skills like emotions and empathy.

Similarly, art, painting, and music are also effective and efficient methods to introduce SEEL in the classroom. Through these creative outlets children can learn to express and develop emotional understanding. Group activities and interactive games also support children to develop important social skills such as teamwork, trust and cooperation. Whereas, mindfulness practices like breathing and meditation can also be introduced to improve focus and self-awareness among the leaner.

Daniel Goleman, one of the pioneers in emotional intelligence, identified self-awareness, self-management, social awareness, relationship skills and relationship decisionmaking as the five core components that align with SEEL.

Image Source: 21K School Blog – Benefits of Social Emotional Learning

These components are closely linked to the culture and ethos and can be taught from a young age.

Importantly, India's New Education Policy, NEP 2020, recognises the importance of holistic education and emphasizes on the values such as empathy, ethics and emotional well-being.

Children's Wellbeing in Classrooms in India

In India, many steps that have been taken to improve the wellbeing of children. However, much more needs to be done in this regard. Apart from cultural values and local ethos, states like Delhi and Uttarakhand, have introduced the Happiness Curriculum for the mindfulness and emotional wellbeing of children in the classroom. Similarly in the state of Jharkhand, programme UDAAN empowers adolescents with life skills and health education. Telangana's Residential Schools, led by visionary educators, have also incorporated SEEL into everyday learning through culturally rooted and innovative programmes.

Challenges in implementation of SEEL in India

Although the NEP 2020 advocates for the holistic development, it does not offer a concrete framework for the integration of SEEL into the curriculum. One of the major challenges is the lack of teachers' training. Most of the teachers in India have not received the training for the SEEL and without proper training it becomes difficult for teachers to nurture emotional intelligence and to implement the SEEL programme. The limited resources especially in the rural and underprivileged areas may also act as the limitation for the SEEL.

Despite the limitations, some steps can be taken to reduce these challenges. For example, proper training should be given to teachers. Well-trained teachers are more likely to understand the importance of SEEL and can help in its implementation. Along with this, the curriculum should also be designed in a way that supports SEEL in classrooms. An age-appropriate curriculum will be more effective for this purpose. Instead of treating it as a separate subject, SEEL can be integrated across disciplines through storytelling, games and discussions. It is also important for the government to invest in research to better understand the effect of SEEL on students' performance and their mental wellbeing. Research on SEEL and data collection can help in shaping better practices and policies for its implementation.

Social and Emotional Learning is not just a programme, rather it is a skill that aids in the development of mindset. As India is working to transform its education system, with the idea of holistic development – SEEL offers a hopeful path for socio-emotional development of children.

Research Associate
Modern Insititute for Education
ferozkhan@mieglobal.in

Raksha Bandhan: A Celebration of Sibling Love and Protection

Raksha Bandhan, a significant festival in Hindu culture, celebrates the sacred bond between brothers and sisters. Observed on the full moon day of the Hindu month of Shravan, this festival is a beautiful expression of sibling love, protection, and responsibility.

The Significance of Rakhi

The term "Raksha Bandhan" translates to "the bond of protection." On this day, sisters tie a sacred thread, known as a rakhi, around their brothers' wrists. This ritual symbolizes the sister's love and prayers for her brother's well-being, as well as the brother's promise to protect his sister from harm. The rakhi serves as a visible reminder of the sibling bond and the responsibilities that come with it.

The History and Mythology Behind Raksha Bandhan

The festival has its roots in Hindu mythology. One popular legend associated with Raksha Bandhan is the story of Lord Krishna and Draupadi. According to the Mahabharata, Krishna injured his finger while battling the demon king Shishupala. Draupadi, moved by his pain, tore a piece of her saree and tied it around his finger to stem the bleeding. Krishna, touched by her gesture, promised to protect her in times of need. When Draupadi was humiliated and disrobed in the court of the Kauravas, Krishna came to her rescue, providing her with an endless supply of fabric to protect her modesty.

The Rituals and Traditions

On Raksha Bandhan, sisters prepare for the festival by cleaning and decorating their homes. They then perform a puja (prayer ceremony) for their brothers, applying tilak (a vermilion mark) on their foreheads and tying rakhi threads around their wrists. Brothers, in turn, give gifts to their sisters as a token of their love and appreciation. The exchange of gifts strengthens the bond between siblings and adds to the festive spirit.

The Modern Significance of Raksha Bandhan

In contemporary times, Raksha Bandhan has evolved beyond its traditional roots. While the core essence of the festival remains the same, its celebration has become more inclusive. Today, people tie rakhis not only to biological siblings but also to cousins, close friends, and even those they consider as brothers or sisters. This broader interpretation reflects the changing dynamics of family and relationships in modern society.

The Cultural Impact

Raksha Bandhan has a significant cultural impact, promoting values of love, respect, and protection within families. It encourages siblings to strengthen their bond and appreciate each other's roles in their lives. The festival also highlights the importance of sibling relationships in shaping our personalities and providing emotional support.

Conclusion

Raksha Bandhan is a beautiful celebration of the sibling bond, emphasizing the importance of love, protection, and responsibility. As we observe this festival, we are reminded of the significance of family ties and the role they play in our lives. Whether through traditional rituals or modern interpretations, Raksha Bandhan continues to be a cherished occasion for siblings to come together and celebrate their unique relationship.

The Emotional Significance

The emotional significance of Raksha Bandhan lies in the deep bond it fosters between siblings. For sisters, tying a rakhi is a way to express their love and seek protection from their brothers. For brothers, it is an opportunity to reaffirm their commitment to safeguarding and supporting their sisters. This mutual exchange of love and promises strengthens the emotional foundation of their relationship.

The Role of Family

Family plays a crucial role in the celebration of Raksha Bandhan. The festival brings families together, providing an opportunity for siblings to reconnect and reaffirm their bond. Parents often play a significant role in teaching their children the importance of sibling relationships and the values associated with Raksha Bandhan.

The Gift of Protection

The gift of protection is a central theme of Raksha Bandhan. Brothers promise to protect their sisters from harm, and sisters pray for their brothers' well-being. This mutual promise of protection creates a sense of security and trust between siblings, strengthening their bond and fostering a lifelong relationship.

The Celebration Beyond Boundaries

Raksha Bandhan is celebrated not only in India but also in other countries with significant Hindu populations. The festival has transcended geographical boundaries, becoming a universal celebration of sibling love and protection. Its message of love, respect, and responsibility resonates with people from diverse backgrounds, making it a festival that can be appreciated by everyone.

In conclusion, Raksha Bandhan is a festival that beautifully captures the essence of sibling relationships. It is a celebration of love, protection, and responsibility, and its significance extends beyond the confines of traditional rituals. As we celebrate this festival, we are reminded of the importance of family ties and the role they play in shaping our lives.

Indian Independence Day: A Celebration of Freedom and Patriotism

Indian Independence Day, celebrated on August 15th every year, marks the day when India finally broke free from British colonial rule in 1947. This momentous occasion is a testament to the unwavering spirit and determination of countless freedom fighters who fought tirelessly for India's independence.

The Struggle for Independence

The struggle for Indian independence was a long and arduous one, spanning several decades. The Indian National Movement, led by prominent figures such as Mahatma Gandhi, Jawaharlal Nehru, and Subhas Chandra Bose, employed various methods, including non-violent civil disobedience and armed resistance, to challenge British authority. The movement gained momentum in the early 20th century, with key events like the Non-Cooperation Movement and the Quit India Movement contributing significantly to the eventual departure of the British.

The Significance of August 15th

August 15, 1947, was the day when India officially became an independent nation. At midnight, Jawaharlal Nehru, the first Prime Minister of India, hoisted the national flag at the Red Fort in Delhi, marking the beginning of a new era for the country. In his iconic speech, Nehru declared, "A moment comes, which comes but rarely in history, when we step out from the old to the new, when an age ends, and when the soul of a nation, long suppressed, finds utterance."

Celebrations and Traditions

Indian Independence Day is celebrated with great fervor and enthusiasm across the country. The day begins with the hoisting of the national flag, followed by parades, cultural events, and patriotic songs. People from all walks of life come together to celebrate the nation's freedom, often dressed in the colors of the Indian flag – saffron, white, and green.

The Role of Freedom Fighters

The freedom fighters who fought for India's independence are revered as national heroes. Mahatma Gandhi's philosophy of non-violence and truth inspired a generation of Indians to join the freedom struggle. Other prominent figures like Bhagat Singh, Sukhdev, and Rajguru sacrificed their lives for the cause, becoming symbols of bravery and patriotism.

The Impact of Independence

Indian Independence Day is not just a celebration of freedom from British rule; it also marks the beginning of a new era of self-governance and nation-building. The day serves as a reminder of the country's progress and achievements since independence, as well as the challenges that still need to be addressed.

Conclusion

Indian Independence Day is a celebration of the nation's hard-won

freedom and the sacrifices made by countless freedom fighters. It's a day to reflect on the country's progress and to reaffirm its commitment to the values of democracy, secularism, and social justice. As Indians come together to celebrate, they honor the spirit of patriotism and nationalism that has shaped the country's history.

The Importance of Patriotism

Patriotism plays a vital role in Indian Independence Day celebrations, as people express their love and pride for their country. The day serves as a reminder of the importance of national unity and the need to work together to build a stronger, more prosperous India.

The Role of Education

Education plays a crucial role in promoting awareness about Indian Independence Day and the country's history. By learning about the freedom struggle and the sacrifices made by national heroes, future generations can develop a deeper appreciation for the nation's freedom and the importance of preserving it.

Inspirational Quotes for Indian Independence Day

Some inspirational quotes for Indian Independence Day include:

- "A nation's culture resides in the hearts and in the soul of its people." - Mahatma Gandhi
- "Freedom is not given, it is taken." - Subhas Chandra Bose
- "The pen is mightier than the sword." - Edward Bulwer-Lytton (relevant to the power of writing and journalism in the freedom struggle)

These quotes capture the essence of Indian independence and the values that have shaped the nation's history.

In conclusion, Indian Independence Day is a celebration of the nation's freedom and the sacrifices made by countless freedom fighters. It's a day to reflect on the country's progress and to reaffirm its commitment to the values of democracy, secularism, and social justice. As Indians come together to celebrate, they honor the spirit of patriotism and nationalism that has shaped the country's history.

Janmashtami: Celebrating the Birth of Lord Krishna

Janmashtami, a significant festival in Hinduism, commemorates the birth of Lord Krishna, an avatar (incarnation) of the god Vishnu. Observed on the eighth day (Ashtami) of the dark fortnight of the month of Bhadrapada, this festival is a joyous celebration of Krishna's life, teachings, and legacy.

The Significance of Janmashtami

Janmashtami is a celebration of the divine love and wisdom embodied by Lord Krishna. Krishna's birth is seen as a symbol of hope, love, and the triumph of good over evil. The festival is observed with great fervor and enthusiasm, particularly in regions like Mathura, Dwarka, and Vrindavan, which are closely associated with Krishna's life.

The Story Behind Janmashtami

According to Hindu mythology, Krishna was born in a prison cell in Mathura, where his parents, Vasudeva and Devaki, were imprisoned by Devaki's brother, King Kamsa. Krishna's birth was foretold to be the cause of Kamsa's downfall, leading Kamsa to order the killing of all newborns in the kingdom. However, Krishna's father, Vasudeva, managed to smuggle him out of the prison and leave him with Nanda and Yashoda, a cowherd couple, who raised him as their own.

Celebrations and Traditions

Janmashtami celebrations vary across different regions, but some common traditions include:

- **Fasting:** Many devotees observe a fast on Janmashtami, breaking it at midnight, the time of Krishna's birth.
- **Midnight Celebrations:** Devotees gather in temples and homes to celebrate Krishna's birth at midnight, often with music, dance, and prayers.
- **Dahi Handi:** In some regions, particularly in Maharashtra, young men form human pyramids to break a pot filled with curd (dahi), symbolizing Krishna's love for butter and dairy products.
- **Decorations:** Temples and homes are decorated with flowers, lights, and Krishna-themed decorations.
- **Bhajans and Kirtans:** Devotees sing devotional songs and perform kirtans (musical recitals) in praise of

Krishna.

The Importance of Krishna's Teachings

Krishna's teachings, as recorded in the Bhagavad Gita, emphasize the importance of duty, morality, and spiritual growth. His message of love, compassion, and selflessness continues to inspire people around the world. Janmashtami is an opportunity for devotees to reflect on Krishna's teachings and incorporate them into their daily lives.

Cultural Significance

Janmashtami has significant cultural implications, promoting values of love, kindness, and righteousness. The festival brings people together, fostering a sense of community and shared heritage. It also provides an opportunity for people to connect with their cultural roots and appreciate the rich traditions and customs associated with Krishna's life.

Conclusion

Janmashtami is a vibrant celebration of Krishna's birth, teachings, and legacy. As devotees come together to observe this festival, they are reminded of the importance of living a life guided by principles of love, compassion, and righteousness. The festival's message of hope and joy continues to inspire people, making it a significant event in the Hindu calendar.

The Role of Temples

Temples play a crucial role in Janmashtami celebrations, serving as centers of devotion and spirituality. Devotees gather in temples to offer prayers, perform rituals, and participate in cultural events. The temples are often decorated with intricate designs and lights, creating a festive atmosphere.

The Significance of Krishna's Life

Krishna's life and teachings serve as a source of inspiration for millions of people. His message of love, compassion, and selflessness continues to guide people on their spiritual journeys. Janmashtami provides an opportunity for devotees to reflect on Krishna's life and teachings, and to incorporate his principles into their daily lives.

The Festive Spirit

The festive spirit of Janmashtami is infectious, spreading joy and happiness wherever it is celebrated. The festival brings people together, creating a sense of community and shared celebration. As devotees come together to observe Janmashtami, they are reminded of the importance of living a life guided by principles of love, compassion, and righteousness.

In conclusion, Janmashtami is a significant festival that celebrates the birth of Lord Krishna and his teachings. The festival's message of love, compassion, and righteousness continues to inspire people, making it an important event in the Hindu calendar. As devotees come together to observe Janmashtami, they are reminded of the importance of living a life guided by principles of love, kindness, and selflessness.

Teej: A Celebration of Love

Teej is a significant festival in Hindu culture, celebrated with great fervor and enthusiasm in various parts of India and other countries. This vibrant festival is dedicated to the goddess Parvati, who embodies the ideals of marital bliss, fertility, and devotion. Teej is observed on the third day of the bright half of the month of Shravan, which usually falls in July or August.

The Significance of Teej

Teej is a celebration of the union between Lord Shiva and Goddess Parvati, symbolizing the perfect marital relationship. The festival is observed by married women, who pray for the long life and prosperity of their husbands, as well as for their own marital bliss and happiness. Unmarried women also participate in the festivities, praying for a suitable partner and a happy married life.

The Rituals and Traditions

Teej celebrations involve various rituals and traditions, which are observed with great devotion and enthusiasm. Some of the key rituals include:

- **Fasting:** Women observe a strict fast on Teej, abstaining from food and water for the entire day. The fast is broken only after the sighting of the moon.
- **Prayer and Worship:** Women offer prayers to Goddess Parvati, seeking her blessings for marital bliss, fertility, and happiness. They also worship Lord Shiva, praying for the well-being of their husbands.
- **Swinging:** A popular tradition during Teej is swinging on swings, which symbolizes the joy and happiness of the festival. Women sing traditional songs and swing on decorated swings, enjoying the festive atmosphere.
- **Henna Application:** Applying henna on hands and feet is an essential part of Teej celebrations. Women decorate their hands and

feet with intricate henna designs, which are believed to bring good luck and happiness.

The Cultural Significance

Teej is a celebration that showcases the rich cultural heritage of India. The festival is an opportunity for women to come together, share their experiences, and strengthen their bonds of friendship and sisterhood. Teej also highlights the importance of marital relationships and the role of women in maintaining family harmony and prosperity.

The Regional Variations

Teej is celebrated with great enthusiasm in various parts of India, with regional variations in rituals and traditions. In Rajasthan, for example, Teej is a major festival, celebrated with traditional songs, dances, and swings. In other regions, the festival is observed with similar fervor, but with unique local flavors and traditions.

The Symbolism of Teej

Teej is a festival that symbolizes the ideals of marital bliss, fertility, and devotion. The festival celebrates the union between Lord Shiva and Goddess Parvati, which represents the perfect balance of masculine and feminine energies. Teej also highlights the importance of women's roles in maintaining family harmony and prosperity.

Conclusion

Teej is a vibrant and joyous festival that celebrates the ideals of marital bliss, fertility, and devotion. The festival is an opportunity for women to come together, share their experiences, and strengthen their bonds of friendship and sisterhood. As Teej is celebrated with great enthusiasm across India, it serves as a reminder of the importance of family harmony, marital relationships, and the role of women in maintaining social balance.

The Importance of Family

Family plays a significant role in Teej celebrations, as women come together to observe the rituals and traditions. The festival strengthens family bonds and promotes a sense of unity and togetherness.

The Role of Women

Women are at the center of Teej celebrations, observing the rituals and traditions with great devotion and enthusiasm. The festival highlights the importance of women's roles in maintaining family harmony and prosperity.

The Festive Atmosphere

The festive atmosphere during Teej is electric, with women singing traditional songs, swinging on decorated swings, and applying henna on their hands and feet. The festival is a celebration of joy, happiness, and marital bliss.

In conclusion, Teej is a significant festival that celebrates the ideals of marital bliss, fertility, and devotion. The festival is an opportunity for women to come together, share their experiences, and strengthen their bonds of friendship and sisterhood. As Teej is celebrated with great enthusiasm across India, it serves as a reminder of the importance of family harmony, marital relationships, and the role of women in maintaining social balance.

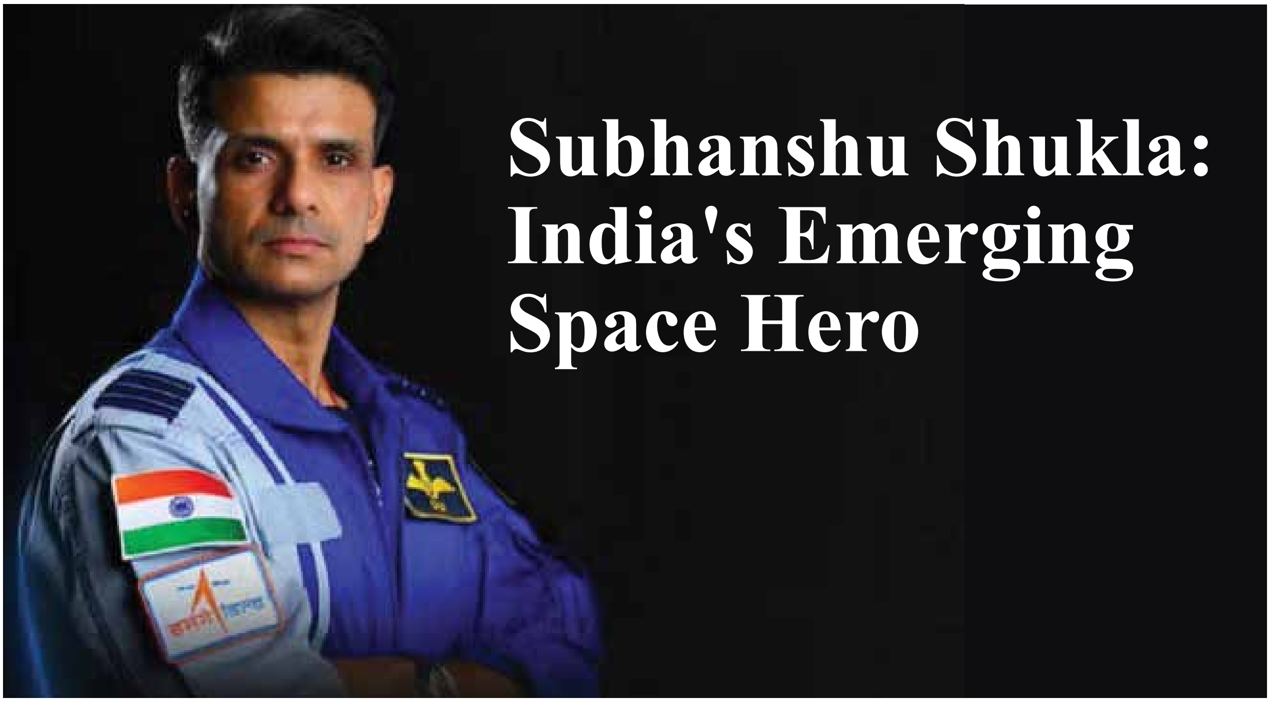

Subhanshu Shukla: India's Emerging Space Hero

Subhanshu Shukla, an Indian Air Force pilot, had been selected as one of the astronauts for India's ambitious Gaganyaan mission. This mission marks a significant milestone in India's space exploration journey, aiming to send Indian astronauts to space by 2025.

The Gaganyaan Mission

The Gaganyaan mission is India's first human spaceflight program, developed by the Indian Space Research Organisation (ISRO). The mission's primary objective is to demonstrate India's capability to send humans to space and safely return them to Earth. The spacecraft was designed to carry a crew of three to an orbit of 400 km and stay there for up to seven days.

Subhanshu Shukla's Journey

As one of the selected astronauts, Subhanshu Shukla had undergone rigorous training to prepare for the challenges of space travel. The training includes physical conditioning, scientific and technical knowledge, and simulation-based training to familiarize him with the spacecraft systems and operations.

India's Space Exploration Ambitions

The Gaganyaan mission is a crucial step in India's space exploration ambitions. It showcases the country's growing capabilities in space technology and its commitment to pushing the boundaries of scientific knowledge. The mission will also inspire a new generation of Indians to pursue careers in science, technology, engineering, and mathematics (STEM).

The Future of Space Exploration

The Gaganyaan mission is not only a significant achievement for India but also a contribution to the global efforts in space exploration. As the world continues to explore the vastness of space, India's participation in this endeavor will help advance our understanding of the universe and its many mysteries.

In conclusion, Subhanshu Shukla's selection as an astronaut for the

Gaganyaan mission is a testament to India's growing capabilities in space exploration. The mission will not only inspire a new generation of Indians but also contribute to the global efforts in space exploration.

Key Highlights of the Gaganyaan Mission

- **Mission Objective:** To send Indian astronauts to space and safely return them to Earth.
- **Spacecraft Design:** The spacecraft is designed to carry a crew of three to an orbit of 400 km and stay there for up to seven days.
- **Launch Vehicle:** The Gaganyaan spacecraft will be launched using the Geosynchronous Satellite Launch Vehicle Mark III (GSLV Mk III).
- **Training:** The selected astronauts, including Subhanshu Shukla, have undergone rigorous training to prepare for the challenges of space travel.

The Gaganyaan mission is a significant milestone in India's space exploration journey, and Subhanshu Shukla's selection as an astronaut is a testament to the country's growing capabilities in space technology.

Shubhanshu Shukla has returned to Earth after an 18-day stay on the International Space Station (ISS) as part of the Axiom-4 mission.

- **Successful Splashdown:** The SpaceX Dragon spacecraft, carrying Shukla and three other crew members, splashed down in the Pacific Ocean near San Diego, California, on July 15, 2025, at 3:01 pm IST.
- **Mission Highlights:** During his stay on the ISS, Shukla orbited the Earth more than 310 times, covering a distance of approximately 1.3 crore kilometers. He conducted several scientific experiments, including studies on muscle regeneration, tardigrades, seed germination, algae cultivation, crop resilience, radiation effects, and human physiology.
- **Return to India:** Shukla is expected to return to India on August 17, 2025, after undergoing post-mission procedures and debriefing sessions in California. Union Minister Jitendra Singh confirmed that Shukla will undergo rehabilitation and discussions with Team ISRO before his return.
- **Government Reaction:** Prime Minister Narendra Modi welcomed Shukla's return, saying, "I join the nation in welcoming Group Captain Shubhanshu Shukla as he returns to Earth from his historic mission to Space." Other prominent leaders, including Uttar Pradesh Chief Minister Yogi Adityanath and Assam Chief Minister Himanta Biswa Sarma, also congratulated Shukla on his achievement.
- **Mission Significance:** The Axiom-4 mission marks a significant milestone in India's space exploration journey, providing valuable experience and insights for the country's human spaceflight program, Gaganyaan. ISRO paid approximately □550 crore for Shukla's participation in the mission.
- **Family Reaction:** Shukla's family celebrated his return with cake-cutting ceremonies in Lucknow. His mother, Asha Shukla, expressed immense pride and excitement, while his father, Shambhu Dayal Shukla, said, "We felt amazing that Shubhanshu's mission was successful and that he had a safe landing."

आदरणीय संपादक महोदय,
सादर नमस्कार।

शिक्षा सारथी पत्रिका का गतांक पढ़ा। पढ़कर अत्यंत हर्ष हुआ कि हरियाणा राज्य में छात्रों के भविष्य को सशक्त बनाने हेतु व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है। 'संघर्ष से सफलता तक : रामेश्वरी बेलबारो की कहानी' अत्यंत प्रेरणादायक लगी। 'सेवा परमो धर्मः' की राह पर स्वयं को तराशते विद्यार्थियों पर आधारित लेख स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता एवं जिम्मेदार नागरिक होने का भाव उत्पन्न करता है। 'व्यावसायिक शिक्षा में बैंकिंग विषय का महत्त्व एवं डिजिटल तकनीक' विषयक लेख अत्यंत उपयोगी एवं प्रेरक है। 'मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला' लेख वैज्ञानिक दृष्टिकोण और जिज्ञासा को प्रोत्साहित करता है।

'बाल सारथी' अंक हमेशा की तरह रोचक एवं ज्ञानवर्धक रहा। 'जब मास्टर जी ने मँगाया पिज़्ज़ा' कहानी गणित विषय के प्रति रुचि जागृत करने वाली लगी। 'योग भगाए रोग' एवं 'मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ' दोनों कविताएँ मन को उत्साह एवं प्रेरणा से भर देती हैं। 'शिक्षा सारथी' पत्रिका की सम्पादकीय टीम को हार्दिक साधुवाद।

आशा है कि भविष्य में भी इस प्रकार की प्रेरणादायक एवं उपयोगी सामग्री हमें प्राप्त होती रहेगी।

सादर,

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, सराय अलावर्दी
गुरुग्राम, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय,
सादर नमस्कार।

मैं 'शिक्षा सारथी' नियमित रूप से पढ़ती हूँ। व्यावसायिक शिक्षा पर केंद्रित गतांक पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। यह अंक हरियाणा में व्यावसायिक शिक्षा की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित करता है और शिक्षा के बदलते स्वरूप की गहरी झलक प्रस्तुत करता है। हरियाणा में व्यावसायिक शिक्षा की रूपांतरण यात्रा विषय पर प्रकाशित लेख अत्यंत सूचनाप्रद था। यह देखकर गर्व हुआ कि हमारे प्रदेश में व्यावसायिक शिक्षा को लेकर गंभीरता से काम हो रहा है और इसे छात्रों के भविष्य निर्माण का आधार माना जा रहा है।

केबीसी जैसी अभिनव पहल, रायपुररानी विद्यालय की प्रेरक गतिविधियाँ और सेवा परमो धर्मः को आत्मसात् करते विद्यार्थियों की कहानियाँ पढ़कर मन प्रसन्न हो गया। ये लेख न केवल शिक्षाप्रद थे, बल्कि उन्होंने यह भी दिखाया कि कैसे सरकारी विद्यालय भी उत्कृष्टता की मिसाल बन सकते हैं। रोज़गार कौशल, सूचना प्रौद्योगिकी में संभावनाएँ और बैंकिंग जैसे विषयों पर प्रकाशित लेखों ने विद्यार्थियों की सोच को आधुनिक दिशा दी है। डिजिटल तकनीक को कौशल शिक्षा से जोड़ने की बात आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है और इस संदर्भ में प्रस्तुत लेख वास्तव में उपयोगी सिद्ध हुए।

'मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला' लेख तो बच्चों के लिए विज्ञान को घर की रसोई से जोड़कर लाया। यह लेख सहजता, सरलता और वैज्ञानिक जानकारी का सुंदर उदाहरण था। वहीं जब मास्टर जी ने मँगाया पिज्जा एक रोचक प्रसंग के साथ गहरे संदेश को भी संप्रेषित करता है।

'बालसारथी' में प्रकाशित बाल रचनाएँ मन को छू गईं। यह स्तंभ बच्चों की सोच और सृजनात्मकता को मंच देने का कार्य कर रहा है, जिसके लिए आपकी पूरी संपादकीय टीम धन्यवाद की पात्र है। यह पत्रिका निश्चित तौर पर विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन का स्रोत भी बन चुकी है।

धन्यवाद।

प्रवीन कुमारी
व्यावसायिक अध्यापिका (ब्यूटी एंड वेलनेस)
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, अमानी
ज़िला-फतेहाबाद, हरियाणा

हर उम्र के अनुसार सही शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सीखना बना अब समग्र, एकीकृत, आनंदमय और रोचक

रटने की बजाय अब अनुभव आधारित शिक्षा पर ज़ोर दिया जा रहा है।

सोचने की क्षमता, रचनात्मकता और आनंद के साथ सीखने को बढ़ावा दिया जा रहा है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा - बुनियादी स्तर और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा - स्कूली शिक्षा से शिक्षण की रूपरेखा में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है।

RNI NO: HARBIL/2012/52385
POSTAL REGD NO: HR/AB-102/23-25

शुरुआत से मिले सही दिशा और आधार

निपुण भारत का सपना, सब बच्चे समझें भाषा और गणना

5
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के 5 वर्ष

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114